ISSN 2319-8419

Published by

Annual and Bi-Lingual International Journal

Vol. 10 ISSUE- 13

GYAN BHAV

Peer Reviewed Journal of Teacher Education

FEBRUARY- 2021

In Collaboration With Up Self Finance Colleges' Association

GYAN BHAV JOURNAL OF TEACHER EDUCATION

EDITOR IN CHIEF

DR. (Mrs.) Abha Krishna Johari
Head, B.Ed. Department
Gyan Mahavidyalaya, Agra Road,
Aligarh (U.P)-202002
Mob. No.- 9456606428

ADVISORY COMMITTEE

DR. Vedram Vedarthi
Ex. Dean, Faculty of Education
Agra University, Agra (U.P.)

Prof. Gunjan Dubey
Teacher Education Department
A.M.U Aligarh
Mob. No.- 9412459713

Prof. Harcharan Lal Sharma
Curriculum Specialist (Moscow)
(Ex-NCERT, NIOS – GOI)
Consultant & Co-ordinator,
School Education Think Tank,
Surya Foundation, New Delhi

Dr. Jai Prakash Singh
D.Lit.
Head, Deptt. of Teacher Education
D.S. (PG) College, Aligarh (U.P.)
Mob. No.- 9410210482

Dr. Punita Govil
Associate Prof.
Department of Education
A.M.U. Aligarh
Mob. No.- 9837146021

Dr. Rajeev Kumar
Ex. Dean, Faculty of Education
Dr. B.R.Ambedkar University
Agra (U.P.)

Editorial Board

Dr. Bhawna Saraswat
Mob. No. 8923814400, 8410873600

Shri Lakhami Chandra
Mob.No. 9457425770

Smt. Vardha Sharma
Mob.No. 8218377489

Dr. Ratna Prakash
Mob.No. 7247875053

SECRETARIAL ASSISTANCE

Mr. Jay Prakash Sharma

Gyan Bhav : Journal of Teacher Education is an Annual and bi-lingual periodical published every year in February by Gyan Mahavidyalaya, Aligarh. Department of Teacher Education of Gyan Mahavidyalaya is accredited **'A' Grade with CGPA 3.16 by National Assessment and Accreditation Council (NAAC) on 5th July, 2012.**

The Journal aims to provide teachers, teacher-educator, educationist, administrator and researchers a forum to present their work to community through original and critical thinking in education.

Manuscripts sent in for publication should be inclusive to Gyan Bhav Journal of Teacher Education. These, along with the abstract, should be in duplicate, typed double-spaced and one side of the sheet only, addressed to the Editor in Chief , Gyan Bhav Journal of Teacher Education, Dept. of Teacher Education, Gyan Mahavidyalaya, Agra Road, Aligarh – 202002

Computer soft copy can be sent by E-mail: **publicationgyan@gmail.com**

Copyright of the articles/research papers published in the journal will rest with Gyan Mahavidyalaya and no matter may be reproduced in any form without the prior permission of Gyan Mahavidyalaya. The content of matter are the views of the author only.

Correspondence related to publication, permission and any other matter should be addressed to the Editor-In-Chief. Our Website :- **https://www.gyanmahavidhyalaya.com/Gyan-Bhav.html**

GYAN BHAV : JOURNAL OF TEACHER EDUCATION **ISSN 2319-8419**
VOL. - 10 FEBRUARY, 2021 **ISSUE- 13**

CONTENTS

S. No.	TITLE		Page No.
1-	राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अंतर्गत अध्यापक शिक्षा में शिक्षकों के सतत् व्यावसायिक विकास की भूमिका	एकता कंसल डॉ० राकेश कुमार शर्मा	4–9
2-	**A STUDY OF THE EFFECT OF SCHOOL ENVIRONMENT ON MORAL VALUES OF THE STUDENTS AT SECONDARY LEVEL**	**Dr. Bhawna Saraswat**	10–18
3-	'ब्रजरत्न' श्रीमती पवित्रा सुहृद के लोकगीतों में वर्णित पारंपरिक शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता	डॉ0 मुक्ता वार्ष्णेय	19–24
4-	'माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाओं की प्रासंगिकता	श्री निखिल मिश्र श्रीमती वर्धा शर्मा	25–32
5-	**EFFECTIVENESS OF SENIOR SECONDARY SCHOOL TEACHERS AND THEIR STRESS**	**Arti Sharma** **Prof. J.S. Bhardwaj** **Dr. Rakesh Kumar Sharma**	33–45

GYAN BHAV : JOURNAL OF TEACHER EDUCATION **ISSN 2319-8419**
VOL. - 10 FEBRUARY, 2021 **ISSUE- 13**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अंतर्गत अध्यापक शिक्षा में शिक्षकों के सतत् व्यावसायिक विकास की भूमिका

*एकता कंसल
**डॉ0 राकेश कुमार शर्मा

शिक्षा राष्ट्र के निर्माण में एक शक्तिशाली भूमिका निभाती है। वास्तव में शिक्षक ही देश के भविष्य को सही आकार देते हैं। छात्रों में जीवन पर्यन्त सीखने की क्षमता, उत्साह और मानसिकता विकसित करने में शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। वर्तमान में ऐसे शिक्षकों को तैयार करने की आवश्यकता है जो समाज की चुनौतियों का सामना करते हुये और प्रौद्योगिकी से सामंजस्य स्थापित करके गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर सकें। सशक्त, कर्मठ, सृजनात्मक, चिन्तनशील और सक्रिय शिक्षकों के निर्माण में अध्यापक शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। देश का विकास भी इस पर निर्भर करता है कि उस देश के शिक्षकों को कैसी शिक्षा प्राप्त हो रही है। पिछले कुछ वर्षों में भ्रष्टाचार के कारण अध्यापक शिक्षा के स्तर में गिरावट आई है जो कि अत्यधिक चिन्ता का विषय है। इस समस्या का समाधान करने की दृष्टि से ही NEP-2020 में शिक्षकों को शिक्षा प्रणाली के मूलभूत ढाँचे का आधार मानकर समाज का अत्यन्त सम्मानित सदस्य स्वीकार करते हुये शिक्षकों के सतत् व्यावसायिक विकास के लिये विभिन्न प्रयासों व प्रावधानों की व्यवस्था की गई है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुसार– 2030 तक देश के सभी सरकारी व निजी विद्यालयों में एक शिक्षक के लिये न्यूनतम् योग्यता चार वर्षीय शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम होना चाहिए, इसी उद्देश्य से NEP-2020 में तीन तरह के बी0एड0 कार्यक्रमों का प्रावधान किया गया है, जिसमें योग्यतानुसार 4 वर्षीय, 2 वर्षीय और 1 वर्षीय बी0एड0 की व्यवस्था है। 2030 तक केवल शैक्षिक रूप में सुदृढ़, बहुविषयक और एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों को ही संचालित किया जायेगा। सभी महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालयों को उच्च स्तरीय अध्यापक शिक्षा विभागों की स्थापना और विकास करना आवश्यक है। शिक्षकों के सतत् व्यावसायिक विकास के लिये शिक्षा व्यवस्था में उत्कृष्ट अध्यापकों का चयन, भावी अध्यापकों का अवधारणात्मक विकास, ऑनलाइन कार्यक्रमों द्वारा शिक्षकों को प्रशिक्षण, शोध कार्यों की व्यवस्था में सुधार और शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में भ्रष्टाचार का उन्मूलन आदि विषयों के लिये प्रावधानों की व्यवस्था की गई है।

अध्यापक शिक्षा के माध्यम से शिक्षकों में भारतीय मूल्यों, ज्ञान, कौशल, परम्पराओं और अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास करके अध्यापक शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया जायेगा, जिससे देश में गुणवत्तापूर्ण और सतत् व्यावसायिक विकास में वृद्धि करने वाली शिक्षा व्यवस्था विकसित की जा सके।

महत्त्वपूर्ण शब्दः–
शिक्षा, अध्यापक शिक्षा, सतत् व्यावसायिक विकास, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, (NEP-2020) गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ।

प्रस्तावनाः–

प्राचीन काल से ही भारत, समाज के पूर्ण विकास के लिये शिक्षा के महत्त्व के प्रति जागरूक रहा है। शिक्षा राष्ट्र के निर्माण में एक शक्तिशाली भूमिका निभाती है। समाज को शिक्षित करने का

*शोध छात्रा, शिक्षाशास्त्र विभाग, चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, मो0नं0. 9690109010
E:mail: ektakansal11234@gmail.com
**एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, मो0नं0. 9457311861,9897434232
E:mail: rksharmaccsu@gmail.com

उत्तरदायित्त्व एक शिक्षक का होता है। वास्तव में शिक्षक ही देश के भविष्य को सही आकार देते हैं। एक देश का विकास इस पर निर्भर करता है, कि उस देश के शिक्षकों को कैसी शिक्षा प्राप्त हो रही है, इसलिये देश के सामाजिक व आर्थिक विकास के लिये स्पष्ट रूप से परिभाषित और भविष्यवादी शिक्षा नीति का लागू होना अत्यन्त आवश्यक है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा 2015 में अपनाये गये 17 SDG'S (Sustainable Development Goal's) में शिक्षा को चौथा महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। अतः शिक्षा के महत्त्व को स्वीकार करते हुए 29 जुलाई, 2020 को भारत सरकार ने अपनी नई शिक्षा नीति घोषित की, जो भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान (ISRO) के पूर्व अध्यक्ष **डॉ0 कस्तूरीरंगन** की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों पर आधारित है।

NEP-2020 में वर्तमान शिक्षा नीति में कई बदलाव प्रस्तावित हैं जो निश्चित रूप से सभी हितधारकों को प्रभावित करेंगे।

यह शोध पत्र अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में घोषित विभिन्न प्रावधानों पर प्रकाश डालता है। NEP-2020 का गहनता से अध्ययन करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि NEP-2020 के अनुसार अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में अवसरों के साथ–साथ चुनौतियों का सामना भी करना होगा, इसलिये अंत में इसके उद्देश्यों को प्राप्त करने और इसके प्रभावी कार्यान्वयन के लिये कुछ सुझाव प्रस्तावित हैं।

शिक्षक की भूमिकाः–

छात्रों में जीवनपर्यन्त सीखने की क्षमता विकसित करने और उनके भविष्य को सही आकार देने में शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। एक शिक्षक को शिक्षाशास्त्र के प्रति पूर्ण समर्पित, अपने विषय का ज्ञाता, स्व अभिप्रेरित और व्यावहारिक होना चाहिये।

सतत् व्यावसायिक विकास का अर्थः–

व्यक्ति का अपने कार्यक्षेत्र में निरन्तर सक्रिय तथा जागरूक रहकर ज्ञानवर्धन द्वारा अपने संज्ञानात्मक स्तर में वृद्धि करते रहने से है।

शिक्षकों के सतत् व्यावसायिक विकास का महत्त्वः–

कौशल और आत्म विश्वास में वृद्धि करके विद्यार्थियों और संस्थान के विकास के लिए योजनावद्ध तरीके से आजीवन प्रयास करते हैं।

शिक्षकों के सतत् व्यावसायिक विकास की आवश्यकताः–

शिक्षक एक अत्यंत सम्मानित तथा महत्त्वपूर्ण पद है। सतत् व्यावसायिक विकास का महत्त्व केवल शिक्षकों की ज्ञान में वृद्धि तक ही सीमित नहीं है अपितु इसके माध्यम से विद्यार्थियों का भी अत्यंत लाभ होगा। अच्छे शिक्षकों के लिए समय–समय पर नई तकनीक और नई शिक्षण विधियों से अवगत होते रहना अत्यंत आवश्यक है।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् 2009 के अनुसारः–

- शिक्षकों को उनके सतत् व्यावसायिक विकास के लिए आवश्यक पर्याप्त समय दिया जाना चाहिये।
- शिक्षकों की सतत् व्यावसायिक विकास की आवश्यकता को पूरा करने के लिए उपयुक्त संसाधन उपलब्ध कराए जाने चाहिये।
- शिक्षकों के सतत् व्यावसायिक विकास के लिए एक व्यवस्थित वार्षिक योजना होनी चाहिये।
- सतत् व्यावसायिक विकास की सामग्री की प्रभावशीलता और प्रासंगिकता को समझने के लिए आवधिक प्रतिक्रिया एकत्र की जानी चाहिये।
- शिक्षकों को स्वयं भी सतत् व्यावसायिक विकास को हस्तक्षेप के रूप में नही देखना चाहिए बल्कि स्वयं को पेशेवरों के रूप में विकसित करने के साधन के रूप में देखना चाहिये।

शोध–पत्र के उद्देश्यः–

शोधार्थिनी ने शोध पत्र के परिप्रेक्ष्य में जिन उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास किया है, वे निम्नवत् हैं–

1. NEP-2020 में अध्यापक शिक्षा से संबंधित प्रावधानों पर प्रकाश डालना।
2. NEP-2020 में अध्यापक शिक्षा क्षेत्र में प्रस्तावित नवाचारों पर प्रकाश डालना।
3. NEP-2020 का अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में पड़ने वाले प्रभावों का पुनर्अनुमान लगाना।
4. NEP-2020 के प्रभावी कार्यान्वयन और लक्ष्य प्राप्ति के लिये कुछ सुझाव की व्याख्या।

शोध प्रक्रियाः–

प्रस्तुत शोध कार्य में NEP-2020 के अनुसार शिक्षकों के सतत् व्यावसायिक विकास के ढाँचे के मुख्य बिन्दुओं के अवधारणात्मक चर्चा से सम्बन्धित प्रक्रिया का वर्णन है। यह शोध पत्र समूह चर्चा पद्धति के आधार पर नवाचारों की पहचान से सम्बन्धित है। इसमें नीति के निहितार्थ पुर्वानुमान विश्लेषण पद्धति का प्रयोग किया गया है। इसमें समूह विश्लेषण पद्धति के आधार पर शिक्षकों के सतत् व्यावसायिक विकास के लिये कुछ सुझाव भी दिये गये हैं।

NEP-2020 की सिफारिशों/प्रावधानों के कार्यान्वयन में शोध पत्र की भूमिकाः–

प्रस्तुत शोध पत्र में NEP-2020 में अध्यापक शिक्षा में गुणात्मक सुधार तथा शिक्षकों के सतत् व्यावसायिक विकास के संबंध में किये गये प्रावधानों के निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है–

- **नियमों का उल्लंघन करने वाले संस्थानों के विरुद्ध कार्यवाही–** नियमों का उल्लंघन करने वाले अध्यापक शिक्षा संस्थानों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही करने का प्रावधान बनाया गया है। वर्ष 2030 तक, केवल शैक्षिक रूप से सुदृढ़ बहुविषयक और एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम ही कार्यान्वित होंगे।

(NEP-2020-15.3)

- **एकल अध्यापक शिक्षा संस्थानों को बहुविषयक संस्थानों में बदलना–** वर्ष 2030 तक सभी अध्यापक शिक्षा संस्थानों को बहुविषयक संस्थानों में बदलना अनिवार्य होगा क्योंकि उन्हें 4 वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा व्यवस्था को संचालित करना होगा।

(NEP-2020-15.3)

- **बहुविषयक विश्वविद्यालयों में अध्यापक शिक्षा विभाग की स्थापना–** सभी बहुविषयक संस्थाओं, महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों को उच्चस्तरीय अध्यापक शिक्षा विभागों की स्थापना और विकास करना आवश्यक होगा ताकि भविष्य के शिक्षकों को शिक्षित करने में भारतीय भाषाओं कला, संगीत, इतिहास, विज्ञान, गणित, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र और साहित्य जैसे विशिष्ट विषयों के विभागों का सहयोग प्राप्त हो सके।

(NEP-2020-15.3)

- **अध्यापकों की न्यूनतम योग्यता निर्धारित–2030** तक देश के सभी सरकारी और निजी विद्यालयों में एक शिक्षक के लिये न्यूनतम डिग्री योग्यता 4 वर्षीय एकीकृत बी0एड0 कार्यक्रम होगा। बी0एड0 के साथ–साथ एक अन्य विषय में भी विशेषज्ञता प्राप्त शिक्षक को ही नियुक्त किया जायेगा। (शिक्षाशास्त्र+अन्य विषय)
- **बी0एड0 के विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों की व्यवस्था–2030** तक सभी 4 वर्षीय एकीकृत बी0एड0 कार्यक्रम संचालित संस्थानों में स्नातक डिग्री धारक छात्रों के लिये 2 वर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम तथा स्नातकोत्तर या 4 वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा प्राप्त छात्रों के लिये 1 वर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की व्यवस्था होगी तथा मेधावी विद्यार्थियों के लिये छात्रवृत्तियों की व्यवस्था भी की जायेगी।

(NEP-2020-15.5)

- **पूर्व–सेवा शिक्षक तैयारी कार्यक्रम में प्रवेश के सम्बन्ध में व्यवस्था–** अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में उत्कृष्ट विद्यार्थियों का चयन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से कार्यक्रमों में प्रवेश राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (NTA) द्वारा आयोजित योग्यता परीक्षणों के माध्यम से होगा, जिससे अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में केवल शिक्षण के लिये पूर्णरूप से समर्पित अध्यापकों का चयन हो।
- **भावी शिक्षकों के अवधारणात्मक विकास के लिये प्रावधान–** शिक्षा विभाग में विभिन्न विषयों के अनुभव प्राप्त विशेषज्ञों को शामिल किया जायेगा, जिससे भावी शिक्षकों का बहु–विषयों में अवधारणात्मक विकास किया जा सके।

(NEP-2020-15.8)

- **पी–एच.डी. कार्यक्रमों का पुनर्उन्मुखीकरण–** शिक्षकों का सतत् व्यावसायिक विकास करने की दृष्टि से नये पी–एच.डी. प्रवेशकर्ताओं को अपने डोकटोरल प्रशिक्षण अवधि के दौरान संबन्धित विषय की शैक्षिक प्रक्रियाओं, पाठ्यक्रम निर्माण, विश्वसनीय मूल्यांकन प्रणाली और संचार जैसे क्षेत्रों का अनुभव प्रदान किया जायेगा। पी–एच.डी. छात्रों के लिये वास्तविक शिक्षक अनुभव के न्यूनतम घंटे भी तय होंगे। इस व्यवस्था के लिये देश के सभी विश्वविद्यालयों में संचालित पी–एच.डी. कार्यकर्ताओं का पुनर्उन्मुखीकरण किया जायेगा।

(NEP-2020-15.9)

- **शिक्षकों के सतत् व्यावसायिक विकास के लिये ऑनलाइन प्रशिक्षण की व्यवस्था–** शिक्षकों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने तथा उपलब्ध व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण और विस्तार करने के उद्देश्य से ऑनलाइन प्रशिक्षण के लिये स्वयं/दीक्षा जैसे प्रौद्योगिकी प्लेटफार्मों को प्रोत्साहित किया जायेगा।

(NEP-2020-15.10)

- **विशेषज्ञों से सलाह के लिये राष्ट्रीय मिशन की स्थापना का प्रावधान–** शिक्षकों को लघु व दीर्घकालीन परामर्श तथा व्यावसायिक सहायता उपलब्ध कराने में वरिष्ठ/सेवा निवृत्त उत्कृष्ट संकाय सदस्यों का सहयोग प्राप्त किया जायेगा।

(NEP-2020-15.11)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अध्यापक शिक्षा पर प्रभावः–

- अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में शिक्षण कार्य के प्रति समर्पित विद्यार्थियों का प्रवेश ही सम्भव होगा।
- भावी शिक्षकों को बहु–विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।
- छात्र केन्द्रित शिक्षण व्यवस्था की स्थापना।
- छात्रों को अपनी शैक्षिक स्थिति के अनुसार उपयुक्त कार्यक्रम में प्रवेश की व्यवस्था।
- विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों द्वारा छात्रों का अवधारणात्मक विकास सम्भव।
- अन्य तकनीकी पाठ्यक्रमों की भाँति शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में विकास की सम्भावना।
- शोध कार्यक्रमों की गुणवत्ता में सुधार तथा नवाचारों पर केन्द्रित।
- ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रमों (स्वयं/दीक्षा) द्वारा शिक्षकों का सतत् व्यावसायिक विकास सम्भव।
- छात्र अध्यापकों को अनुभवी सेवानिवृत्त संकाय सदस्यों के ज्ञान का लाभ प्राप्त।
- छात्र अध्यापकों में अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास।
- अध्यापकों की पदोन्नति और स्थानान्तरण की व्यवस्था पक्षपात रहित होगी।
- अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में व्याप्त भ्रष्टाचार का उन्मूलन होगा।
- अध्यापकों की कार्य स्थिति तथा दशाओं में सुधार सम्भव।
- सतत् व्यावसायिक विकास द्वारा अध्यापकों में जीवन पर्यन्त सीखने की क्षमता विकसित करना।

भावी सुधार के लिये सुझावः–

यद्यपि NEP-2020 में अध्यापक शिक्षा तथा शिक्षकों के सतत् व्यावसायिक विकास के सम्बन्ध में अनेक प्रावधान किय गये हैं परन्तु राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कुछ कमियाँ रह गई हैं। NEP-2020 के भावी सुधार के लिये कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं–

- **महाविद्यालयों के अध्यापकों के लिये पी–एच.डी. योग्यता अनिवार्य–** जिस प्रकार शिक्षकों के लिये सभी स्तर पर अध्यापन के लिये 4 वर्षीय एकीकृत प्रशिक्षण आवश्यक है, उसी प्रकार देश के सभी महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में पूर्णकालिक अध्यापक नियुक्ति के लिये पी–एच.डी.

की योग्यता होना अनिवार्य होना चाहिये, ताकि शिक्षकों का सतत् व्यावसायिक विकास सम्भव हो सके।

- **शिक्षकों के लिये शोध पत्र प्रकाशित करवाना अनिवार्य–** अध्यापक/शिक्षकों के लिये प्रतिवर्ष 02 शोध पत्र प्रकाशित करवाना अनिवार्य होना चाहिये ताकि उनका सतत् व्यावसायिक विकास और शिक्षण में गुणात्मक विकास होता रहे।
- **बहुविषयक विद्यालयों की स्पष्ट परिभाषा–** बहु–विषयक विद्यालय और विश्वविद्यालयों से तात्पर्य को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना आवश्यक है कि बहु–विषयक संस्थानों में कम से कम 5–6 विभिन्न विषयों के विभागों की स्थापना करना अनिवार्य होना चाहिये।
- **शिक्षकों की प्रोन्नति के संबन्ध में समरूपता–** देश के सभी विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में शिक्षकों की प्रोन्नति तथा वेतन वृद्धि केवल वरिष्ठता के आधार पर न होकर उनके वार्षिक प्रस्तुतीकरण सूची API के आधार पर होनी चाहिये, जिससे शिक्षक अपने सतत् व्यावसायिक विकास के प्रति/जागरूक और सक्रिय रहें।
- **एकीकृत राष्ट्रीय Digital पुस्तकालय की व्यवस्था अनिवार्य–** देश के सभी अध्यापक शिक्षा संस्थानों में Digital पुस्तकालय की व्यवस्था अनिवार्य होनी चाहिये, जिससे कि भावी शिक्षक सरलता से नयी प्रकाशित किताबों तथा शोध पत्रों से अवगत होकर अपना सतत् व्यावसायिक विकास कर सकें।

निष्कर्षः–

अन्त में यह कह सकते हैं कि भारत सरकार ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिये एक बड़ा कदम NEP-2020 के रूप में उठाया है। NEP-2020 में शिक्षकों को शिक्षा प्रणाली के मूलभूत ढाँचे का आधार मानते हुये समाज में अत्यन्त सम्मानित व आदरणीय सदस्य स्वीकार किया गया है तथा शिक्षकों के सतत् व्यावसायिक विकास के लिये विभिन्न प्रयास व प्रावधानों की व्यवस्था की गई है।

NEP-2020 शिक्षकों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, बहु विषयक ज्ञान, छात्रवृत्तियों की व्यवस्था, अवधाराणात्मक विकास, स्वयं/दीक्षा जैसे तकनीक आधारित कार्यक्रम, बालविकासकेन्द्रित शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध कराने तथा सम्मेलनों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल होने की व्यवस्था द्वारा शिक्षकों का सतत् व्यावसायिक विकास करने की महान क्षमता दृष्टिगोचर होती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

- National Education Policy 2020.https://www.mnrd.gov.in/sites/uploadfilis/mhrd/files/nep/
- Draft National Education Policy-2019, https://innovate.mygov.inwpcontent/uploads/2019/06/mygov15596510111.pdf
- Aithal, P.S. etal., (2020);www.srinivaspublication.com
- National Curriculum Framwork for Teacher Education, NCFTE2009, NCTE New Delhi.
- National Council for teacher Education, 2009

A STUDY OF THE EFFECT OF SCHOOL ENVIRONMENT ON MORAL VALUES OF THE STUDENTS AT SECONDARY LEVEL

***Dr. Bhawna Saraswat**

Abstract:

Present study is an attempt to find out the effect of school environment on moral values of 450 students of intermediate schools affiliated to U P Board constitute the sample of the study, Secondary School Students. Simple random technique was applied. Students were divided into three groups like high, average and low on the bases of perceived school environment. F ratio and t ratio were applied for treatment of the data. On the basis of the finding, it may be concluded that moral values of the students are slightly affected by the school environment.

Introduction:

Human beings live in social environment, which not only changes the very structure of an individual or just compels him to recognize fact but also provides him with a readymade system of sign. It imposes a series of obligations on him. Two environments, home and school share an influential space in child's life and there exists a unique juxtaposition between the two (Tucker & Bernstein, 1979). According to Sagar and Kaplan (1972), by its very nature, the family is the social biological unit that exerts the greatest influence on the development and perpetuation of the individual's behaviour. Next to family, the school is the most important experience in the process of child development. When the child enters the school arena, he or she is presented with new opportunities in terms of socialization and cognitive development. These opportunities are provided in different measures in different school and may have a direct impact on the cognitive and affective behaviours of students. The nature of this impact can be understood if we devote our research energies to find out the environmental variables that are most effective in promoting optimum development of each child's potentialities.

School Environment Variables:

(a) Creative stimulation:-It refers to "Teacher's activities to provide conditions and opportunities to stimulate great thinking".
(b) Cognitive and encouragement: - It implies "Teacher's behaviour to stimulate cognitive development of the students by encouraging his actions or behaviours".
(c) Permissiveness: - It indicates, "A school climate in which students are provided opportunities to expressed their views freely and act according to their desires with no interruption from teachers".
(d) Acceptance:- It implies "A measure of teachers unconditional love, recognizing that students have the right to express feeling, to uniqueness, and to be autonomous individual's. Teacher accept the feelings of students in a non- threatening manner".
(e) Rejection:- It refers to "A school climate in which teachers do not accord recognition to students right to deviate, act freely and be autonomous persons".
(f) Control:- It indicates "Autocratic atmosphere of the school in which several restriction are imposed on students to discipline them.[3]

*M.A.(Psychology & Hindi),M.Ed., M.Phil(Education), NET(Education), Ph.D.(Education)
Email ID. Bhawna26aug@gmail.com Mob. No. 8923814400

Moral Values :

The behaviour of any person is a reflection of his values, valueless life is meaningless. Society and environment have a unique role in the formation of values since human beings cannot live without society. In this regard famous scholar *Emile Durkhem i*s of the opinion, "Impact of society is fully reflected in the personality of a human being." This inner and outer behaviour reflects social consciousness of the society. Therefore, many thinkers have termed society as a moral power. Moral and spiritual development is considered a very important part of the curriculum for students. Probably it is more important than the whole of material development. Moral and spiritual development is the main function of those human values without which no other social function is possible. In fact, without value education process itself will become meaningless and irrelevant. In reflection to value education the Supreme Court in its historical judgement given on 12th September 2002, said that value based education has become the need of the hour.

The great philosopher *Plato* defined education as training which develops good morality in the children through good habits. In the words of father of the nation *Mahatma Gandhi* – the whole function of education can be expressed in one word i.e. morality. It means morality and moral education are key elements without which education remains incomplete. Today the world is progressing at the speed at which moral values are declining. The whole world has established many standards but the world has created many *'Bhasmasur'* for the whole of mankind like atom bombs, environment crisis, terrorism, violence and malice etc. By and large today mankind is at the gun point of destructive powers. Fundamental values like good-will, tolerance, honesty, simplicity, cleanliness are fighting the aforesaid crisis. In this regard, the great philosopher Ross says that if we want to construct a high class civilization through education and maintain it and want to protect it from decline, then education must be based on morality. This implies that if we develop other human aspects which are removed from morality, the effects would be harmful, for example if science and technology are used by the educated class without a moral base say for destructive aims. Perhaps illiteracy would be better than education.2

Objectives:

1. To study the school environment at secondary level of Aligarh district.
2. To Study the Moral Values of the students at secondary level.
3. To examine the effect of School Environment on Moral Values of the students at secondary level.

Hypotheses:

1. There will be average school Environment as perceived by the students.
2. There will be average moral values as shown by the students gone through the adopted test (Moral Values Scale (M.V.S.) by Alpana Sen Gupta and Arun kumar singh) for the study.
3. There is no significant effect of the School Environment on the Moral Values of the students at secondary level.

Delimitations of the study:

1. The present study is delimited to the students of class X studying in the government and government aided intermediate college affiliated to U. P. Board, Allahabad.
2. Study was delimited to the variables taken under study.
3. Study was delimited to Aligarh district only.

Research Methodology:

Descriptive survey method has been used for the study. Having the view on research methods it was found that descriptive survey method is best suitable for present study so researcher adopted the survey method.

Variables:

In the present study the researcher analyzed the research variables as:

1. Independent variables: In the present study "school environment" is considered as independent variable.
2. Dependent variable: In the present study "moral values" is considered as dependent variable.
3. Intervening variables: In the present study, all psychological Physical and emotional characteristics of the students are considered as intervening variables. A part of these variables, socio-economic status, and culture are also considered as intervening variables.

Control of Intervening Variables:

Present study is a type of descriptive research and survey methods is used to collect the data. Direct control of variables is not possible in survey studies so researcher used randomization to control the effect of intervening variables on dependent variables.

Sample (450):

In the present study sample size is 450. To achieve the objective of the study, the researcher selected the appropriate and representative sample through random sampling technique.

Sampling:

In relation to the size of the sample, first of all researcher collected the list of total senior secondary schools located in Aligarh district, from the office District Inspector of Schools. At the time of study(2013) the total No of government and government aided higher secondary school and inter colleges in Aligarh district were 93 and in 93 schools the total no of students enrolled in class X were 9300 approximately.

The researcher decided to take 50% (4650) of total population for the sample of the present study. 5% of total population lies in 10 to 15 schools. So the researcher made a list of total schools the researcher selected 12 schools to collect the data. The researcher used the lottery technique to select the school.

Table-1
List of selected Govt. / Govt. Aided Selected School and Sample

S.No.	Name of School	Type Govt./Govt. Aided	No of Total Students	Sample Students
1.	Chob Singh Inter College, Khair Bypass, Aligarh	Govt. aided	109	32
2.	Chiranjilal Girls Inter College, Aligarh	Do	112	39
3.	Adhar High School Jiroli Hira Singh, Aligarh	Do	127	40
4.	Rashtriya Inter College, Khair, Aligarh	Do	126	38
5.	Nagar Palika Inter College, Atrauli, Aligarh	Do	150	45
6.	Shivdan Singh Inter College, Iglas, Aligarh	Do	110	40
7.	Baroli Inter College, Brauli Rao, Aligarh	Do	110	38
8.	Krishna Nanda Inter College, Jalali, Aligarh	Do	92	30
9.	Kisan Inter College, Budhansi, Aligarh	Do	128	37
10.	Raghuvir Sahai Inter College, Aligarh	Do	120	40

11.	Govt. Inter College, Aligarh	Govt.	118	38
12.	Maheshwari Inter College, Aligarh	Govt. Aided	100	33
		Total	1402	450

N=Total Sample=450

After the selection of schools the researcher collected the data.

Tool of the Study:

Following tools have been used for gathering information regarding the present study.

1. School Environment Inventory (S.E.I.) by Dr. Karuna Shankar Mishra.[1]
2. Moral Values Scale (M.V.S.) by Alpana Sen Gupta and Arun kumar singh[1]

Statistical Techniques[5]:

The following statistical techniques have been used to find out the conclusion study.

1. Mean
2. Standard deviation
3. T-ratio
4. F-Test (Value)
5. Pearson correlation

Finding of the Study:

The objective No. 01 of the study **To study the school environment at secondary level of Aligarh district.**

To find out the effect of School Environment perceived by the students The researcher calculated Mean score and Standard Deviation of the students given as under table 1.0

Table-2
Showing No. of Students, Mean and Standard Deviation of School Environment

Total No. of Students	Mean	Standard Deviation
450	27.04	3.21

To study the scores of students obtained on S.E.I. it refers to high, average and low S.E.I.

Table-3

According to the Manual of S. E. I.

S. No.	Categories of the students	Score obtained
1.	High perceived school environment	34 & Above
2.	Average perceived school environment	23 to 33
3.	Low perceived school environment	Below 23

The researcher calculate the mean and standard deviation of 3 groups of students categories on basis of scores obtained on S.E.I.

School Environment Perceived by the Students

S. No.	Categories	Students	Mean	S.D
1.	High	142	20.93	19.92
2.	Average	178	164.47	13.41
3.	Low	130	113.35	25.26
	Total	450		

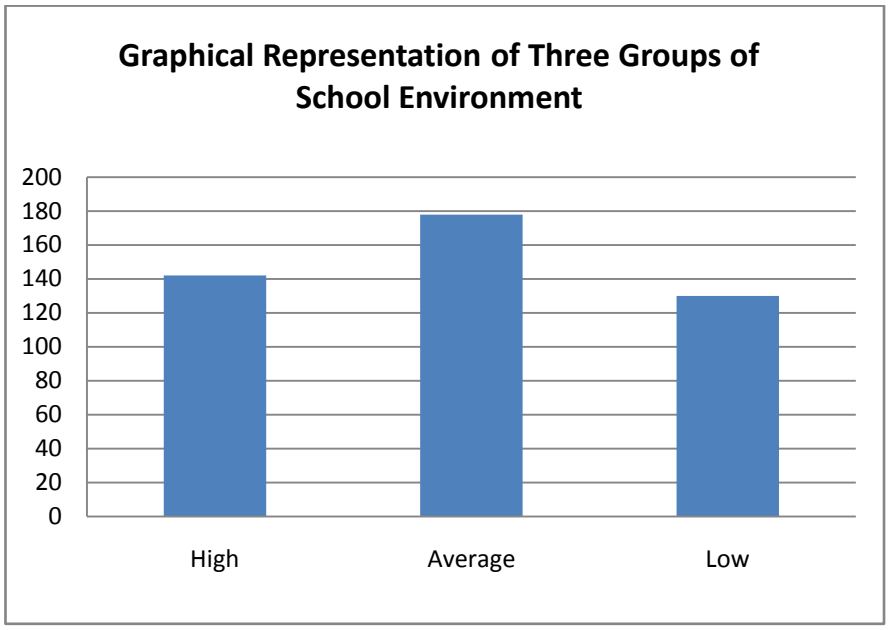

To Find Out the moral values of the Students:

Objective No. 2 : To study the Moral Values of the Students at Secondary Level

In the present Study Moral Values considered as third dependent variable. Objective no.2 is related to Study the Moral Values of boys and girls students of secondary level. To find out Mean and Standard Deviation of scores obtained on Moral Values inventory. The Mean and Standard Deviation of students on Moral value scale are as follows:-

Table -4

Showing no. of students Mean and Standard Deviation of Moral Values

No. of Students 450	Mean	Standard Deviation
450	28.50	3.86

On the basis of Mean scores obtained by the students on Moral value scale it can be state that the distribution of scores is normal and most of students secured average marks.

After that the Researcher divided the scores in to the three categories. The Mean Standard Deviation of three categories of the scores of Moral value are as given below:-

Table-5
Showing Moral value perceived by the students

School Environment	N	Mean	S.D.
Moral value of students **HIGH** perceived School Environment	142	29.64	3.21
Moral value of students **AVERAGE** perceived School Environment	178	28.35	3.98
Moral value of students **LOW** perceived School Environment	130	27.53	4.40

(Hypotheses Number 1 and 2 proved by the objective Number 1 and 2)

Objective No. 03 **To examine the effect of School Environment on Moral Values of the students at secondary level.**

The third objective of present Study was to find out the effect of School Environment on Moral Values of the scores of the students. The researcher formulate hypothesis no.3 which assume that there is no significant effect of the School Environment on the Moral Values of the students at secondary level. To achieve this objective The researcher calculate Mean Standard Deviation and 'F' value of the scores to find out the difference the scores are given in the following table.

Table-6
F-value of Moral Values

	Mean	**S.D.**	**'F' value**
Moral Values of **HIGH** S.E.	29.64	3.21	6.18
Moral Values of **AVERAGE** S.E.	28.35	3.98	
Moral Values of **LOW** S.E.	27.53	4.40	

N=450

To find out the significant difference among three categories of School Environment on Moral Values marks obtained by the students. The researcher calculated analysis of variance, the calculated value of 'F' was 6.18 the reference value of 'F' on 0.01 and 0.05 level are 8.02, 4.26 simultaneously. The calculated value of 'F' is less than 8.02 the reference value is more than 4.26. So the Null hypothesis which assume that there is no significant difference in between Moral value and School Environment accepted on 0.01 level and rejected on 0.05 level.

t-Ratio After Significant F-ratio

The aim of research process is to validate fact and make it variable. To make sure than the finding of the present Study are valid and replicable. The researcher calculated 't' value of concern variable. The researcher divided depended variables in to three categories e.g. High perceived School Environment to average perceived School Environment, High perceived School Environment to low perceived School Environment, average perceived School Environment to low perceived School Environment. The description of this calculation is given below:-

Table-7
't' Calculation of Moral Values

S. No.	**Groups**	**N**	**Mean**	**σ.D.**	**T**	**Level of significant**
1	Moral Values of students **HIGH** perceived School Environment	142	29.87	0.39	3.93	0.01 level significant
	Moral Values of students **AVERAGE** perceived School Environment	178	28.28			
2	Moral Values of students **HIGH** perceived School Environment	142	29.87	0.45	5.22	0.01 level significant
	Moral Values of students **LOW** perceived School Environment	130	27.53			
3	Moral Values of students **AVERAGE** perceived School Environment	178	28.28	0.47	1.57	0.01 level non-significant
	Moral Values of students **LOW** perceived School Environment	130	27.53			

To calculate t-value The researcher divided each dependent variable into three category and six groups on the basis of perceived School Environment. After that The researcher calculated Mean Standard error and t Values. The t value of three groups (mentioned above) are 3.93, 5.22, and 1.57 expressed the two groups different significantly to each other in relation the scores of students on Moral Values inventory. But one group Moral Values of students (average perceived School Environment) and Moral Values of students (low perceived School Environment) are not different significantly to each other earlier The researcher calculated F value of three groups of Moral Values on the basis of School Environment. The F value was found 6.18. it was indicated that the groups were different to each other and at last it is states that findings of **t** test and **F** test are partially similar.

Findings of the Study

In the present Study the researcher test whether there is any significant difference in the scores of dependent variables in relation to Independent variable or not? It will be considered as interactional effect of independent variables.

1. The first objective of this Study was to know the School Environments of secondary level students in Aligarh district. On the basis of data analysis it was found that the students of different schools of Aligarh district perceived different type of School Environment. Even the students of the same school perceived different school environment also. So with this it can be concluded that School Environment is a matter of individual difference. The Mean score on School Environment inventory obtained by all students of secondary level was 27.04. so The researcher may state that the students of secondary level perceive average level of School Environment. The distribution of scores is normal as it follows normal probability curve. Maximum students perceived School Environment 'Average' and few students perceived 'Low' as well as 'High' so The researcher divided into three categories high, average, and low for the further investigation.
2. The objective no.02 of the present Study was to find out the Moral Values of the students. It was found after the statistical analysis of the data. The Mean score of Moral value 28.50 and Standard Deviation is 3.86 of Moral value states that the students have the average level on Moral Values with individual difference.
3. The objective 03 of the Study is related to find out the effect of School Environment on Moral Values. It was found after the statistical calculation that the Mean scores of the students on Moral Values. The students who perceived School Environment high is 29.64 and Standard Deviation 3.21. The Mean scores of students on Moral Values who perceived School Environment average is 28.35 and Standard Deviation is 3.98. The Mean scores of the students on Moral Values of the students who perceived School Environment low is 27.53 and Standards Deviation 4.40.To find out the significant difference among three categories of School Environment or Moral Values marks obtained by the students. The researcher calculated analysis of variance the calculated value of 'F' was 6.18 the reference value of 'F' on 0.1 and 0.05 level are 8.02, 4.26 simultaneously. The calculated value of 'F' is less than 8.02. The reference value and more than 4.26. So the Null hypothesis no. 03 which assume that there is no significant difference between Moral value and School Environment accepted on 0.01 level and rejected on 0.05 level.

Discussion of the Study

The discussion related to findings and conclusion given as under:-

- School Environment is the independent variable of the present Study. The students of secondary level of Aligarh district perceive the School Environment differently. The scores of School Environment distributed symmetrically in the population. Most of the students perceived School Environment average and other students perceived high as well as low Environment. The School of this district selected randomly so it can be hypotheses that both (Govt. and Govt.aided) types of School included in the population. So it is a logical fact that a normal distributed population represented by a random sample. So the findings and conclusion of the present Study are according to the normal distribution.
- Moral Values is the burning issue of our society. What are the main causes to decline Values and how we improve Moral Values with the help of education is the most important issue before psychologists. The present Study demonstrate the average level of Moral Values of the students some students obtained high and low marks simultaneously. It indicates that the score of Moral value of students were normalized. They represent the total population of Aligarh district and can be used to further implications. The district behind that the students were belong to different groups of society and different religion so the very of the scores on Moral value scale.
- The researcher also draws a conclusion about the School Environment and Moral Values that these two variables are represents to each other and don't have positive relation in between. So why these type of result concluded if we Study the nature of Moral Values than we found the answer of this question. The development of Moral value is a matter of early age and parental care and the atmosphere of home play a vital role in the development of marks among students and when fifth and sixth year old child come to the School. He come with his own Values. It was a deep effect of family on the mind of the student that not possible to change life time so the result of our Study closely related to the results of other studies and our day to day experience.4

Conclusion of the Study

The researcher conclude the following about the Study:-

1. The students of secondary level of Aligarh district perceived overall Average School Environment. But some students perceived Good S.E. and Poor S.E. according to their perception about creative stimulation, Cognitive encouragement, acceptance, permissiveness, rejected and control.
2. It is concluded about the Moral value of the students of Aligarh district of secondary level that the students belongs to 'Average level' of Moral Values.
3. It may conclude about the effect of School Environment on Moral Values of the students of secondary level of Aligarh district that there is some effect of School Environment on Moral value because the score of School Environment and Moral Values difference significantly on .05 level.

References:

1. Catalogue (2012). National Psychological Corporation Bhargava Bhawan, Kacheri Ghat, Agra – 282004 (India) website: www.npcindia.com Page 36
2. Gupta sen Alpana & Singh Kumar. " Arun. Manual for Moral Value Scale"
3. Mishra,Shankar, Karuna (1983). Manual for School Environment Inventory, Ankur Psychological Agency, Lucknow
4. Saraswat,Bhawna.(2019).Study of the effect of school environment on study habits ,emotional maturity, moral values and educational aspiration of the students at secondary level. Ph.D. Thesis submitted to mewar university, Gangrar,Chittorgarh.
5. Sharma, R. A. (2007). Essentials of scientific Behavioral Research, R. Lal Book Dept. Meerut. Page 72,117,309,345

Note:- This research paper is based on unpublished thesis of Ph.D. "STUDY OF THE EFFECT OF SCHOOL ENVIRONMENT ON STUDY HABITS, EMOTIONAL MATURITY, MORAL VALUES AND EDUCATIONAL ASPIRATIONS OF THE STUDENTS AT SECONDARY LEVEL" of researcher Dr. Bhawna Saraswat. This thesis was submitted in **MEWAR UNIVERSITY, GANGRAR, CHITTORGARH** in year 2019.

'ब्रजरत्न' श्रीमती पवित्रा सुह्रद के लोकगीतों में वर्णित पारंपरिक शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता

***डॉ. मुक्ता वार्ष्णेय**

लोक संगीत भारतीय संगीत की आधारशिला है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पारंपरिक जीवनमूल्यों का ह्रास होने व पाश्चात्य संस्कृति का अधिक प्रभाव होने से लोक संगीत में रची–बसी शिक्षा को उजागर करने की अत्यन्त आवश्यकता है। 'ब्रजरत्न' श्रीमती पवित्रा सुह्रय ने लोक संस्कृति एवं शिक्षा की धरोहर का संकलन किया और अपने उत्कृष्ट गायन द्वारा 'ब्रजरत्न' जैसे अनेक सम्मान प्राप्त किये। आपने राधा–कृष्ण लीला, माँ दुर्गा महिमा, ऋतु वर्णन, पावन तुलसी महिमा, होली गीत, संस्कार–गीत इत्यादि जीवन के सभी पक्षों के लोकगीतों को नवीन दिशा प्रदान की। आपके लोकगीतों में छिपी पारंपरिक जीवन मूल्यों की शिक्षा को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जानने के साथ–साथ आत्मसात् करने व जनमानस में इस शिक्षा का विस्तार करने के उद्देश्य से लोकगीतों में छिपी पारंपरिक शिक्षा की सारगर्भिकता है।

संगीत मानव की नैसर्गिक क्रिया है। यह उतना ही प्राचीन है, जितना मानव समाज। आशय यह है कि जब मानव अपनी आदिम अवस्था में था, तब भी वह अपने भावों को किसी न किसी धुन में अभिव्यक्त करता था। धीरे–धीरे ये धुनें लोकगीतों में परिवर्तित होने लगीं। जितने भी विषय, कला या परम्पराएँ जनमानस में प्रचलित हैं, उस जनमानस के लिए लोक शब्द का प्रयोग किया जाता है। लोक शब्द अंग्रेजी के Folk का पर्याय है। लोगों अर्थात् जनसाधारण के बीच जो भी धुनें या गीत गाए–बजाए जाते हैं, वे सभी लोक संगीत के अन्तर्गत आते हैं। **मार्च 1972 की 'संगीत पत्रिका में उल्लेख किया गया है** कि 'लोक धुनें ही भारतीय संगीत का आधार है। सर्वप्रथम जन समूह ने गीतों की धुनें सामूहिक रूप से रचीं। इन धुनों में मानवीय जीवन के उद्गार थे।''[1]

जिस प्रकार व्यक्ति समाज की महत्त्वपूर्ण इकाई है और समाज के साथ उसका घनिष्ठ सम्बन्ध है, ठीक उसी प्रकार लोकगीतों का सम्बन्ध समाज से है। विभिन्न प्रान्तों की भाषा एवं स्थानीय भाषा, रहन–सहन, रीति–रिवाज और त्योहारों के अनुसार लोकगीत बनाये तथा गाए जाते हैं। कहा जाता है कि भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा का स्वरूप पारंपरिक लोकगीतों में दृष्टिगोचर होता है। हमारे देश में लोकगीतों की समृद्ध परंपरा रही है। प्रत्येक प्रांत की बोली एवं सुरलगाव पर लोकगीत आधारित होते हैं तथा पृथक – पृथक गीतों के साथ विभिन्न वाद्यों की संगत द्वारा गीतों में आकर्षण लाया जाता है। ब्रज लोकगीतों के साथ ढोलक की थाप, मंजीरा, चिमटा व खड़ताल इत्यादि बाद्य मनमोहक लगते हैं। लोकगीत हिन्दू जन–मानस में रचे–बसे हैं। इन गीतों की भूमिका सामाजिक जीवन के बहुमुखी विकास में अग्रणी रही है। वर्षों से ये गीत जीवन के रस, संवेदना और संस्कृति को गहनतम स्तर पर जोड़ते रहे हैं। यदि लोकगीत न होते, तो हमारी सांस्कृतिक धारा समृद्ध, सहज, व्यापक और व्यावहारिक भी न होती। इन गीतों के माध्यम से सभी

*****एम0ए0, बी0एड0, नेट, पी–एच.डी. (संगीत) सहायक प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा संकाय, ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़ (उ0प्र0) मो0 नं0–09410210345 Email- muktavarshney01dec@gmail.com

देवी–देवताओं की महिमा हमारे सामाजिक एवं सांस्कृतिक आदर्शों को दिशा प्रदान करती है। लोकगीत जीवन के सभी पक्ष, अवसर और तीज–त्योहारों से सम्प्रयुक्त होते हैं। ये गीत पारंपरिक शिक्षा एवं संस्कृति के सहजवाहक हैं। **इन गीतों के माध्यम से हम किस प्रकार समाज में शिक्षा का संदेश दे सकते हैं एवं ब्रजक्षेत्र की मिट्टी की खुशबू से जनमानस को सुगन्धित कर सकते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में 'ब्रजरत्न' श्रीमती पवित्रा सुहृद द्वारा संकलित ब्रज लोकगीतों में विद्यमान पारंपरिक शिक्षा को मुखरित किया गया है।**

ब्रज लोकगीतों में बाँसुरी संग श्रीकृष्ण :– मथुरा श्रीकृष्ण का जन्म स्थान होने व मथुरा के आस–पास 84 कोस में ब्रजक्षेत्र राधा–कृष्ण की लीलाओं से सांस्कृतिक इतिहास का केन्द्र बन गया है। कृष्ण की बंसी राधा व सखियों को मंत्रमुग्ध करने का माध्यम रही है। प्रस्तुत गीत में गोपियाँ प्रभु से कहती हैं कि जब आप बंसी बजाते हो, तो हम सब सुध–बुध खो बैठती हैं। बाँसुरी की मिठास को **निम्न लोकगीत में प्रदर्शित किया गया है–**

''घनश्याम तेरी बंसी, पागल कर जाती है।
जब जमुना पे बजती है, घायल कर जाती है।।
सोने की होती तो, न जाने क्या करती।
तेरी बाँस की बंसी पे, दुनिया मर जाती है।
तुम गोरे होते तो, न जाने क्या करते।
तेरी साँवरी सूरत पे, दुनिया मर जाती है।।''[2]

इसी गीत में बंसी की मधुर स्वर लहरी मन को मोह लेती है। **यह गीत हमें शिक्षा देता है कि सोने से भी बहुमूल्य, बाँसुरी से निकलने वाले स्वरों का संयोजन है। साँवरी सूरत से बाँसुरी के माधुर्य का कोई मेल नहीं अर्थात् व्यक्ति के गुणों की पहचान गोरे व काले रंग पर निर्भर नहीं करती और नाहीं योग्यता से सोने की तुलना की जा सकती है।**

ब्रज लोकगीतों में देवी–पूजा :– माँ दुर्गा को शक्तिस्वरूपा माना गया है। वर्ष में चैत्र व आश्विन माह में दो बार, नौ भिन्न रूपों में माँ की उपासना करके मनोकामना पूर्ण करने का आशीर्वाद प्राप्त किया जाता है। इस अवसर पर संध्या काल में लगभग पूरे पखवाड़े माँ को समर्पित लोकगीत गाने की परंपरा प्रचलित है। **प्रस्तुत गीत में माँ के प्रति भक्त की समर्पित भावना को अभिव्यक्त किया गया है–**

'पार करो मेरा बेड़ा भवानी,
पार करो मेरा बेड़ा ।
भक्तों को माँ ऐसा वर दो,
प्यार की एक नजर माँ कर दो,
लूटे न कोई लुटेरा भवानी।

जग जननी तेरी जोत जगाई,

इस दीदार की आस लगाई,

हृदय करो बसेरा भवानी।''[3]

प्रस्तुत गीत के माध्यम से परेशानियों में घिरकर माँ के सम्मुख भक्त की पुकार प्रदर्शित की गयी है। कठिन परिस्थितियों में भी यदि समर्पित भाव से माँ की स्तुति की जाय, तो शनैः – शनैः विघ्न–बाधाएँ समाप्त होने लगती हैं। भक्ति की शक्ति को लुटेरा लूट नहीं सकता, यह केवल सच्ची निष्ठा से ही प्राप्त की जा सकती है और घर, परिवार व समाज में सुख–शांति का संचार हो सकता है।

ब्रज लोकगीतों में ऋतु वर्णन :– भारत त्योहारों का देश है। लोकगीतों में ऋतुओं के अनुसार उठते मनोभावों का बड़ा ही सुन्दर और सजीव वर्णन मिलता है। वर्षा ऋतु में प्रकृति का हरा–भरा होना, बरखा–बहारों में मन का उल्लास, कहीं कोयल की कूक तो कहीं, पपीहे की पिहु–पिहु और कहीं मयूर का नृत्य इस ऋतु के मनभावन दृश्यों में मानो हम सब सराबोर हो जाते हैं। **प्रस्तुत लोकगीत में वृन्दावन में जब मोर बोलते हैं, तब श्री कृष्ण की लीलाओं का वर्णन किया गया है–**

'गोकुल में मच रहो शोर, वृन्दावन मोर बोल रहे।

उड़–उड़ मोर कदम पर बैठे,

और बैठे पंख खोर।

उड़–उड़ पंख गिरे जमुना में,

और बीनत नंद किशोर।

इन पंख को मुकुट बनायो

और पहरत नंद किशोर।

कान्हऊ नाचे मोर नाचे

बंसी बाजी घनघोर।'[4]

प्रस्तुत गीत से हमें शिक्षा मिलती है कि वर्षा ऋृतु में प्रकृति हरी–भरी होकर न केवल व्यक्ति विशेष को उल्लसित करती है वरन् पेड़–पौधे व पक्षी भी प्रकृति के रंग में रंगकर क्रीड़ा करते हैं। इसलिए हमें ऋृतुओं के सौन्दर्य एवं त्योहारों को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जीवंत बनाना आवश्यक है, जिससे हम शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ जीवन व्यतीत कर सकें, क्यों कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन व मस्तिष्क निवास करता है।

वर्षाऋृतु के पश्चात् शरद ऋृतु में आकाश स्वच्छ हो जाता है और चन्द्रमा का निर्मल प्रकाश चारों ओर फैलने से मानो अमृत की वर्षा होती है। इस प्रकार शरद ऋतु का विशेष महत्त्व चाँद की निर्मल चाँदनी से होता है, साथ ही इन्हीं दिनों में सोए हुए देव जग जाते हैं और घर–घर शादी–विवाह व शुभ कार्य होने लगते हैं।

लोकगीत

'जाड़े का महीना सुखदाई मोरे रसिया।

घर–घर ठाकुर तुलसी की पूजा,

सखियाँ कार्तिक नहाई मोरे रसिया।

उठ गये देव होन लगे साये,

घर–घर बजत बधाई मोरे रसिया।'[5]

प्रस्तुत गीत में पारंपरिक जीवन मूल्यों की शिक्षा को उजागर किया गया है। कार्तिक मास में महिलाएँ तारों की छाँव में स्नान कर विष्णु भगवान और तुलसी माँ की पूजा – अर्चना करती हैं तथा कामना करती हैं कि हे सृष्टि के पालक हमारे घर में अन्न–धन के भंडार भरे रहें और सदैव खुशियों का संचार रहे। इस समय देव उठ जाते हैं और घरों में सभी शुभ कार्य प्रारम्भ हो जाते हैं।

ब्रज लोकगीतों में पावन तुलसी :– पारंपरिक मान्यताओं के अनुसार प्रत्येक हिन्दू घर–परिवार में तुलसी का पौधा होना चाहिए। यह पौधा पवित्र एवं पूजनीय माना जाता है। मान्यता है कि जिस घर में तुलसी का पौधा होता है, वहाँ ब्रह्मा, विष्णु और शिव आदि समस्त देवी–देवताओं का वास होता है। तुलसी औषधीय पौधा है, जिसके उपभोग से रोग–प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है तथा बीमारियों से बचे रहते हैं। **प्रस्तुत गीत में तुलसी की भक्ति महिमा प्रदर्शित की गयी है–**

'लाओ री सखियाँ, हरो–हरो गोबर, पियरी सी माँटी,

समुद्र जल पानी, तौ तुलसी को मंदिर लिपॉओ राम।

आषाढ़ तुलसा मई घनघोरी,

तौ सावन तीजें पूजी हो राम।

भादों में तुलसा रैन अँधेरी,

तौ क्वार में पितर संजोए हो राम।'[6]

इस प्रकार यह गीत हमें शिक्षा देता है कि कठिन संघर्षों के बाद ही लक्ष्य की प्राप्ति सम्भव होती है। जिस प्रकार तुलसी महारानी को जप–तप के पश्चात् वर रूप में सालिग्राम मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उसी प्रकार वर्तमान में धैर्य, लगन, निष्ठा एवं भक्ति के मार्ग पर अडिग रहकर लक्ष्य तक पहुँचा जा सकता है अर्थात् आज के वैज्ञानिक युग में भी तुलसी की महिमा कम नहीं है।

ब्रज लोकगीतों में होलीः– भारतीय जन–जीवन में मनाए जाने वाले त्योहारों में होली का विशेष महत्त्व है। फाल्गुन माह की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला यह त्योहार आपसी प्रेम और सद्भाव बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राधा और कृष्ण के प्रेम से जुड़ जाने के कारण होली का माधुर्य और अधिक बढ़ गया है। **प्रस्तुत गीत में होली की उमंग का वर्णन है–**

'आज बिरज में होली रे रसिया,

होली रे रसिया, बरजोरी रे रसिया।

इक लंग खेलें कृष्ण कन्हैयाँ

इक लंग राधा गोरी रे रसिया।

कृष्ण के हाथ कनक पिचकारी

राधा के हाथ कमोरी रे रसिया।'[7]

इस त्योहार का सम्बन्ध ब्रजवासियों में उमंग का परिचायक है, क्यों कि जिस त्योहार के नायक व नायिका स्वयं भगवान कृष्ण व राधे–रानी हैं, वह त्योहार आपसी प्रेम, सद्भावना, भाईचारा आदि जीवन मूल्यों की शिक्षा देता है।

ब्रज लोकगीतों में शिव महिमाः – ब्रज लोकगीतों में भगवान शिव की महिमा अतुलनीय है। ऐसी मान्यता है कि भोले बाबा सभी भूलों को जरा सी बिनती पर क्षमा कर देते हैं। **प्रस्तुत लोकगीत में भगवान शंकर की महिमा का वर्णन किया गया है–**

'मेरे भोला को अनाड़ी मत जानो री।

अनाड़ी मत जानो, खिलाड़ी मत जानो री।।

भोला के सिर पै गंगा बिराजे।

गंगा को देख, पनिहारी मत जानो री।।

भोला के हाथों में डमरू बिराजे।

डमरू को देख, मदारी मत जानो री।।[8]

इस लोकगीत में शिक्षाप्रद बिन्दु यह है कि हम दूसरे व्यक्ति की खूबियों को जानने, पहचानने एवं समझने का प्रयास करें। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिभाओं की कमी नहीं, कमी तो सिर्फ हममें ही विद्यमान है। हम स्वयं अपना गुणगान न करते हुए सकारात्मक होकर दूसरे व्यक्ति की गुणवत्ता को पहचानें।

ब्रज लोकगीतों में बरनी :– भारतीय संस्कृति में वैवाहिक संस्कारों का विशेष महत्त्व है। लोकगीतों में लड़की (बरनी) पक्ष की ओर से लगन, गोद, मेंहदी, जयमाला इत्यादि गीत गाने की परंपरा रही है। **गीतों के माध्यम से बरनी को शिक्षा दी जाती है कि अपने संस्कारों से दूसरे परिवार में जीवन मूल्यों की शिक्षा कायम रखे। प्रस्तुत गीत में रिश्तों को निभाने पर बल दिया गया है–**

'बड़े नाजों से पाला है बरनी तुम्हें।

वहाँ जाकर मिलेंगे ससुर जी तुम्हें।।

उन्हें पिताजी समझ के निभाना बरनी।।

वहाँ जाकर मिलेंगी सासु जी तुम्हें।

उन्हें मम्मी समझ के निभाना बरनी।।'[9]

इस गीत में मुख्य बिन्दु यह है कि लड़की को विवाह के उपरान्त सास–ससुर को अपने माता–पिता के समान समझना चाहिए। इससे रिश्तों की डोर मजबूत होती है तथा बड़ों का सदैव आशीर्वाद बना रहता है, जिससे घर में खुशियों का माहौल होने से सकारात्मकता बनी रहती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में लोकगीतों में छिपी शिक्षा को समझने की महती आवश्यकता है, जिससे भारतीय संस्कृति, संस्कार एवं आदर्शों पर चलकर भावी पीढ़ी अपनी पृथक पहचान कायम कर सके तथा भारतीय सांस्कृतिक विरासत जीवंत रह सके। इस प्रकार लोकगीत जनमानस के जीवन का अभिन्न अंग हैं। इन गीतों के अभाव में हम मानवीय मूल्यों से अछूते रह जाते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा डॉ0 महारानी, संगीत मणि (भाग–1), पेज नं0 183, द्वितीय संस्करण 2012, भुवनेश्वरी प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. सुहृदय ब्रजरत्न श्रीमती पवित्रा, ब्रज लोक साहित्य, पेज नं0 बी–71, प्रथम संस्करण 2014, ब्रज प्रदेश प्रकाशन, वरदान, अलीगढ़।
3. सुहृदय ब्रजरत्न श्रीमती पवित्रा, ब्रज लोक साहित्य, पेज नं0 148, संस्करण द्वितीय चरण 2005, ब्रज प्रदेश प्रकाशन, अलीगढ़।
4. सुहृदय ब्रजरत्न श्रीमती पवित्रा, ब्रज लोक साहित्य, पेज नं0 –बी0–178, प्रथम संस्करण 2014, ब्रज प्रदेश प्रकाशन, वरदान, अलीगढ़।
5. सुहृदय ब्रजरत्न श्रीमती पवित्रा, ब्रज लोक साहित्य, पेज नं0–बी0–118, प्रथम संस्करण 2014, ब्रज प्रदेश प्रकाशन, वरदान, अलीगढ़।
6. सुहृदय ब्रजरत्न श्रीमती पवित्रा, ब्रज लोक साहित्य, पेज नं0–बी0–46, प्रथम संस्करण 2014, ब्रज प्रदेश प्रकाशन, वरदान, अलीगढ़।
7. सुहृदय ब्रजरत्न श्रीमती पवित्रा, ब्रज लोक साहित्य, पेज नं0–बी0–47, प्रथम संस्करण 2014, ब्रज प्रदेश प्रकाशन, वरदान, अलीगढ़।
8. सुहृदय ब्रजरत्न श्रीमती पवित्रा, ब्रज लोक साहित्य, पेज नं0–16, संस्करण द्वितीय चरण 2005, ब्रज प्रदेश प्रकाशन, अलीगढ़।
9. सुहृदय ब्रजरत्न श्रीमती पवित्रा, ब्रज लोक साहित्य, पेज नं0– 362, संस्करण द्वितीय चरण 2005, ब्रज प्रदेश प्रकाशन, अलीगढ़।

GYAN BHAV : JOURNAL OF TEACHER EDUCATION **ISSN 2319-8419**
VOL. - 10 FEBRUARY, 2021 **ISSUE- 13**

'माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाओं की प्रासंगिकता

***निखिल मिश्र**
****श्रीमती वर्धा शर्मा**

शिक्षा विद्यार्थी के व्यक्तित्त्व विकास का एक सशक्त माध्यम है, जिसके द्वारा विद्यार्थी अपने भावी जीवन में आने वाली चुनोतियों का सहजता से सामना कर सफलता प्राप्त करने के लिए तैयार होता है। शिक्षा का ही एक भाग है– पाठ्य सहगामी क्रियाएँ, जो बालकों के सर्वांगीण विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, परन्तु वर्तमान शिक्षा में इन पाठ्य सहगामी क्रियाओं की आवश्यकता की ओर उतना ध्यान नहीं दिया जाता, जितना दिया जाना चाहिये। उसे सदैव एक अतिरिक्त पाठ्येत्तर क्रियाओं के रूप में समझा गया है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाओं की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला गया है।

आज का युग वैज्ञानिक युग है, जिसमें नये–नये आविष्कारों के द्वारा नयी–नयी तकनीकों का विकास हो रहा है। इस तकनीकी विकास से शिक्षा भी अछूती नहीं रही है। वर्तमान में शिक्षा विद्यार्थियों के केवल ज्ञानात्मक एवं मानसिक विकास तक ही सीमित न रहकर उसके सर्वांगीण विकास की ओर अग्रसर हुई है। अतः वर्तमान शिक्षा के अन्तर्गत शारीरिक विकास, भावात्मक विकास, सामाजिक विकास के साथ–साथ क्रियात्मक रूप से विद्यार्थियों को सक्रिय करने पर महत्त्व दिया जा रहा है। इसके लिये समन्वित कार्यक्रम के संगठन की परिकल्पना की गई है, जिसके द्वारा विद्यालयों में पाठ्यक्रम के साथ–साथ पाठ्य सहगामी क्रियाओं के संचालन की आवश्यकता पर भी बल दिया जा रहा है, जिन्हें किसी समय अतिरिक्त पाठ्येत्तर गतिविधियों की संज्ञा दी गई थी, जो कि विद्यालय एवं विद्यार्थियों की रूचियों एवं सुविधाओं पर आधारित थीं। इन क्रियाओं की न तो कोई समय तालिका थी और न ही सफलता और असफलता के प्रति विशेष ध्यान दिया जाता था, परन्तु अब इसकी आधुनिक अवधारणा अतिरिक्त पाठ्येत्तर गतिविधियाँ न होकर पाठ्य सहगामी क्रियाओं के रूप में सामने आयी है, जिन्हें पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार किया गया है। ये क्रियाएँ न केवल विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व विकास के लिए आवश्यक गुणों जैसे मूल प्रवृत्तियों का शोधन एवं परिमार्जन, सामाजिकता की भावना का विकास, नागरिकता के गुणों का विकास, ज्ञान का व्यावहारिक प्रयोग करना, अवकाश के समय का सदुपयोग करना, मानसिक स्वास्थ्य का विकास, नैतिकता का विकास एवं विद्यार्थियों की विशेष रूचियों के विकास के साथ–साथ किशोरावस्था के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति में भी सहायता करती हैं। इस प्रकार उपर्युक्त महत्त्व को सफल बनाने के लिए न केवल उन्हें व्यावहारिक शिक्षा का ज्ञान प्रदान करती हैं वरन् उनके संपूर्ण व्यक्तित्त्व का विकास भी करती है।

* M.Com., LL.B. , M.Ed., NET (Commerce & Education) Assistant Professor, Education Department, D.S. College, Aligarh (U.P.) Mobile No.-9719119332 Email- nikhil.misra76@gmail.com

**M.Sc. (Botany), M.Ed., NET (Education) Assistant Professor (Teachers' Education Department) Mobile No. 8218377489 Email- Vardha.sharma81@gmail.com

अध्ययन की आवश्यकता:– वैदिक कालीन शिक्षा (भारतीय प्राचीनतम शिक्षा) के अंतर्गत लौकिक तथा आध्यात्मिक शिक्षा का ऐसा समन्वय होता था जो न कि विद्यार्थियों के मानसिक विकास में सहायक होती थी बल्कि विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यक्तित्त्व का विकास करने में भी सहायक होती थी, परंतु वर्तमान में शिक्षा का आधुनिकीकरण होने से वह विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व में संपूर्णता प्रदान नहीं कर पा रही है।

आज की शिक्षा द्वारा विद्यार्थी शैक्षिक उपलब्धियाँ तो प्राप्त कर लेता है परंतु सामाजिकता, नैतिकता, स्वस्थ मानसिकता, पारिवारिक सहयोग जैसे गुणों के अभाव के कारण व्यावहारिक जीवन में असफल देखे जा सकते हैं, जिसका उदाहरण है कि आज विद्यार्थियों का अपने माता–पिता के जरा से डाँट देने पर या परीक्षा में असफल हो जाने पर आत्महत्या कर लेना मानसिक अपूर्णता या अस्वस्थता को दर्शाता है।

डॉ0 राधाकृष्णनन् ने शिक्षा केन्द्रों के नाम अपने 15 दिसम्बर, 1978 के पत्र में लिखा है– शिक्षा का अर्थ सिर्फ विभिन्न शैक्षिक विषयों का शिक्षण नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थी में समग्र उत्तरदायित्त्व का विकास है। अतः विश्वविद्यालय के प्रत्येक संभव प्रयास व उपाय से विद्यार्थियों की शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों का पूर्ण विकास होना चाहिए। इन्हीं विचारों को मानते हुए माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952) ने विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व विकास को भारत की आर्थिक सामाजिक एवं राजनीतिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य के रूप में निर्धारित किया।[1] मुदालियर आयोग ने पाठ्यक्रम में विभिन्नीकरण की सिफारिश करते हुए बहुउद्देशीय विद्यालयों में शिल्प विषयों में से काष्ठ–कार्य, धातु कार्य, मुद्रण कार्य, बागवानी, सिलाई व कढ़ाई, दर्जी का काम तथा वैकल्पिक विषयों में से वाणिज्य, टाइपिंग(टंकण), बहीखाता, शार्टहैण्ड (आशुलिपि), कृषि,पशुपालन, वनस्पति शास्त्र, आहार, पोषण, पाक कला, मातृ कला, गृह प्रबन्ध, कला, नृत्य, संगीत, चित्रकला, आलेखन आदि की शिक्षण व्यवस्था करने की बात कही। माध्यमिक शिक्षा आयोग की समस्याओं के अन्तर्गत पाठ्य पुस्तकों एवं खेल के मैदानों की कमी पर जोर दिया है।[2] राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 में 17 आधारभूत सिद्धान्तों में कार्य अनुभव तथा राष्ट्रीय सेवा पर जोर दिया, जिसमें सामुदायिक सेवा तथा राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के सार्थक एवं चुनौतीपूर्ण कार्यक्रमों सहित कार्य अनुभव तथा राष्ट्रीय सेवा पर जोर दिया। इसी के साथ–साथ खेलकूद एवं शारीरिक योग्यता पर बल दिया।[3]

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के कुल 12 भागों के 5 वें भाग के 5.10 बिन्दु में राष्ट्रीय केन्द्रित शिक्षा क्रम की तरह एक शिक्षा क्रम अनौपचारिक शिक्षा पद्धति के लिए भी तैयार किये जाने की बात कही है, लेकिन यह शिक्षा क्रम विद्यार्थियों की जरूरतों पर आधारित होने की बात कही है। अनौपचारिक शिक्षा के कार्यक्रम में सहभागी होते हुए शिक्षा प्राप्त करने का वातावरण उपलब्ध कराने की बात कही, जिसमें खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, भ्रमण आदि की व्यवस्था पर विशेष ध्यान देने का प्रावधान है।[4]

विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्त्व निर्माण हेतु माध्यमिक शिक्षा आयोग, विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा दी गयी सिफारिशें जो वर्तमान में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के नाम से जानी जाती हैं, विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं, इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इस शोध पत्र के विषय '' विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाओं की प्रासंगिकता'' की आवश्यकता महसूस की।

अध्ययन की परिकल्पनाः– वर्तमान आधुनिक शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व विकास में पाठ्य सहगामी क्रियायें प्रासंगिक हैं।

अध्ययन के उद्देश्यः–

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नांकित है–

1. व्यक्तित्त्व विकास की अवधारणा से परिचित होना।
2. पाठ्य सहगामी क्रियाओं का अध्ययन।
3. व्यक्तित्त्व विकास के पाठ्य सहगामी क्रियाओं से संबंध को जानना।
4. विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाओं की भूमिका का अध्ययन करना।
5. वर्तमान परिस्थितियों में विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाओं की प्रासंगिकता पर विचार करना।

अध्ययन की सीमाएँ :– विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का क्षेत्र बहुत व्यापक है। प्रस्तुत अध्ययन में आधुनिक भारतीय परिवेश में माध्यमिक कक्षाओं (हाईस्कूल) के विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का एक पक्ष (व्यक्तित्त्व विकास) को ही उजागर करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन की विधिः– उपर्युक्त अध्ययन के लिए चयनित समस्या विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाओं की प्रासंगिकता के लिए वर्णनात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है, इस विधि के अनुसार व्यक्तित्त्व विकास में महत्त्व रखने वाली पाठ्य सहगामी क्रियाओं के संबंध में उपलब्ध साहित्य, महत्त्व, आवश्यकता, प्रकार, व्यक्तित्त्व विकास से संबंघ का निहित मूल्यों में अध्ययन करके सत्यापन किया गया है।

संबंधित साहित्य का अध्ययनः– शिक्षा में पाठ्य सहगामी क्रियाओं से संबंधित कई शोध कार्य हुए जिसमें उनकी विभिन्न समस्याओं का वैज्ञानिक शोध किया गया है, जिनमें से कुछ अध्ययन निम्नलिखित है–

दास, द्विपमल्लिका[5] 2016 हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों में सर्वांगीण विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाओं की भूमिका, गुवाहाटी (भारत), विशेष संदर्भ में एक अध्ययनः

अध्ययन के परिणाम स्वरूप प्राप्त हुआ कि पाठ्य सहगामी क्रियाएँ विद्यालयों में आयोजित गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, यह गतिविधियाँ विद्यार्थियों को अपने व्यक्तित्त्व को विकसित करने में मदद करती हैं, विद्यार्थियों में नेतृत्त्व करने, रचनात्मकता और आपसी समन्वय जैसे गुण इस प्रकार की गतिविधियों का अभ्यास करके विकसित हो सकते हैं।

महमूद, ताहिर (2012)[5] द्वारा पाठ्य सहगामी क्रियाओं का माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व विकास पर पड़ने वाले प्रभाव पर किए गए अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि ये क्रियायें विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

रंजना पाठक (1977–78)[5] रंजना पाठक ने अपने शोध में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के कम होने के कारण प्राप्त किये।

"Study on the Co-Curricular activites in the girls higher schools of greater Guwahati and its impact on the student's life Guwahati Assam में अध्ययन द्वारा बताया कि इन विद्यालयों में कोई भी पर्याप्त तथा प्रशिक्षित अध्यापक किसी भी प्रकार की पाठ्य सहगामी क्रियाओं को करवाने हेतु उपलब्ध नहीं थे। गुवाहाटी के कई विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियायें कराने हेतु उचित साधन नहीं थे। शोधानुसार पाठ्य सहगामी क्रियाओं के न होने के कई कारण पाये गये जैसे– विद्यार्थियों द्वारा इन क्रियाओं में कम भाग लेना, पर्याप्त स्टाफ की कमी, उत्साह की कमी, विद्यार्थियों में इस ओर रूचि का न होना मैदान/विद्यालय का छोटा होना आदि।

गोधुली धकारिया (1981–82)[5] द्वारा किये गये शोध विषय Study of the existing facilities available for physical welfare of the student's in the secondary school of Guwahati Assam में उजागर किया कि गुवाहाटी के अधिकतर माध्यमिक विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा के प्रति बहुत पिछड़ापन है। विद्यार्थियों को शारीरिक शिक्षा देने के लिए यह विद्यालय बहुत पीछे थे। विद्यार्थियों की मानसिक एवं शारीरिक समस्याओं के निदान हेतु कोई भी पृथक निर्देशन केन्द्र नहीं पाया गया।

Carnegie corporation, New yark, march (1992) [6]

The Role of sport's in youth development विषय पर तैयार की गयी अपनी रिपोर्ट (प्रतिवेदन) में उजागर किया कि खेलों में प्रतिभाग करने से विद्यार्थी जिम्मेदार, सामाजिक, आत्मविश्वासी, बेहतर शारीरिक गठन, मानसिक रूप से स्वस्थ जैसे गुणों में प्रधान होते हैं।

Today's all USA High School May14, 1998, USA-[6] के अनुसार उन 60 विद्यार्थियों में से जिन्होंने परीक्षाओं में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त किया है, 51 विद्यार्थी ऐसे थे जो अधिक से अधिक खेलों में, भाषण प्रतियोगिता, वाद–विवाद तथा संगीत की क्रियाओं में प्रतिभाग करते थे।

पाठ्य सहगामी क्रियाएँ– पाठ्य सहगामी क्रियाएँ एक ऐसा पाठ्यक्रम है जो मुख्य पाठ्यक्रम के पूरक के रूप में है। यह संपूर्ण पाठ्यक्रम का महत्त्वपूर्ण भाग है, जो विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व का विकास करने के साथ ही विद्यालयी शिक्षा को मजबूत करने में सहायक हैं। ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रकारः– माध्यमिक/हाईस्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए पाठ्य सहगामी–क्रियाओं के प्रकार निम्नलिखित हैंः–

साहित्यिक क्रियाएँः– किशोरावस्था में विद्यार्थियों के अन्दर विचारों को व्यक्त करने की तीव्र भावना होती है, अतः साहित्यिक क्रियाएँ विद्यार्थियों को आत्म–प्रकाशन का अवसर प्रदान करती हैं। विद्यार्थी अपने मन के विचारों को बिना किसी झिझक और सहायता से सही रूप से व्यक्त करने में सक्षम होता है। इनके अन्तर्गत निम्नलिखित क्रियायें सम्मिलित हैं।

(क) वाद–विवाद– विद्यार्थियों में तर्क–शक्ति, चिन्तन शक्ति तथा कल्पना शक्ति का विकास होता है। विद्यार्थी पक्ष–विपक्ष के विषय में समझ विकसित करता है।

(ख) भाषण कलाः– विद्यार्थी अपने विचारों को व्यवस्थित क्रम में प्रकट करना सीखता है।

(ग) विद्यालय पत्रिकाः– विद्यालयों में प्रकाशित होने वाली वार्षिक विद्यालय पत्रिका से विद्यार्थियों की लेखन शैली तथा स्वतन्त्रतापूर्वक विचारों को रखने की कला का विकास होता है।

संगीत तथा नाट्य क्रियाएँ– संगीत तथा नाट्य से जुड़ी क्रियाएँ विद्यार्थियों के मानसिक विकास के साथ–साथ शारीरिक व संवेगात्मक विकास करती हैं। किशोरावस्था तनाव एवं संघर्ष की अवस्था है। अतः ये क्रियाएँ उस तनाव एवं संघर्ष की अवस्था को संतुष्टि प्रदान करती हैं।

खेल–कूद तथा शारीरिक व्यायामः– स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है। खेल–कूद से जुड़ी गतिविधियाँ विद्यार्थियों के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के लिए बेहद महत्त्वपूर्ण है।

विषय संबंधी समितिः– विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अन्तर्गत कुछ विषय ऐसे होते हैं जिन पर विशेष समिति का गठन किया जा सकता है, जैसेः– विज्ञान क्लब, कृषि समुदाय, भाषा समिति आदि। इन विषय समितियों के द्वारा विद्यार्थियों में विषय सम्बन्धी कठिनाइयों को दूर करके उन विषयों के प्रति रूचिं को विकसित किया जा सकता है।

शैक्षिक भ्रमणः– शैक्षिक भ्रमण के द्वारा विद्यार्थियों में व्यावहारिक ज्ञान, नेतृत्त्व क्षमता का विकास, सहयोग की भावना का विकास करने में सहायता प्राप्त होती है।

छात्र/विद्यार्थी परिषदः– विद्यार्थियों द्वारा अपने प्रतिनिधि चुनने की गतिविधि हैं जिससे विद्यार्थियों में स्वयं निर्णय लेने की क्षमता, चारित्रिक भावना, सामाजिक सहयोग, उत्तरदायित्त्व की भावना तथा नैतिकता के गुणों का संगठन करने की कला का विकास होता है।

दैनिक प्रार्थनाः– दैनिक प्रार्थना तथा राष्ट्रगान के द्वारा विद्यार्थियों में देश प्रेम का भाव, नैतिक मूल्यों का विकास, आध्यात्मिक विकास, के साथ–साथ विद्यार्थियों में नियमितता व अनुशासन का विकास होता है।

विद्यालय क्लबः– विद्यालय क्लबों के माध्यम से विद्यार्थियों में सामूहिकता, सामाजिकता व निर्णय लेने की क्षमता तथा आत्म प्रकाशन की क्षमता का विकास होता है।

सैन्य शिक्षा सम्बन्धी कियाएँ (एन0सी0सी0):– किशोरावस्था में विद्यार्थी अधिक ऊर्जावान होते है, इनकी क्षमताओं का पूर्ण प्रयोग करते हुए उन्हें विकसित किया जाये तो विद्यार्थी का व्यक्तित्त्व विकास सही प्रकार होता है।

कला संबंधी क्रियाएँः– इनके अन्तर्गत चित्रांकन, रेखाचित्र, व्यंग्य चित्र, नृत्य, संगीत आदि आते हैं। इन क्रियाओं के द्वारा विद्यार्थियों के अन्दर सौन्दर्यात्मकता का भाव उत्पन्न होता है तथा सृजनात्मकता का विकास होता है।

सामाजिक क्रियाएँः– इनके अन्तर्गत एन0एस0एस0 (राष्ट्रीय सेवा योजना), साक्षरता कार्यक्रम तथा समाज से जुड़ी क्रियाएँ आती हैं।[7]

व्यक्तित्त्व विकासः– व्यक्तित्त्व किसी मनुष्य के स्वभाव, व्यवहार, संवेग और सिद्धान्तों का सम्मिश्रण है। किसी बालक के जीवन की शुरूआत से ही उसके व्यक्तित्त्व का विकास शुरू हो जाता है और धीरे–धीरे यह व्यक्तित्त्व जीवन के सकारात्मक एवं नकारात्मक कारकों के आधार पर गठित हो

जाता है। व्यक्तित्त्व विकास व्यक्तित्त्व को विकसित करने की एक प्रक्रिया है जो व्यक्ति को आत्म विश्वास के साथ एक सफल जीवन निर्वाह करने में सहायता प्रदान करती है।[8]

व्यक्तित्त्व विकास को प्रभावित करने वाले कारकः– किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्त्व दो प्रकार के कारकों से प्रभावित होता है– **1**. जैविक कारक **2**. वातावरणीय कारक

व्यक्ति में कुछ गुण जन्मजात होते हैं जिन्हें हम जैविक गुण कहते हैं, परंतु वातावरणीय कारकों के अंतर्गत भौतिक एवं सामाजिक कारकों का सम्मिश्रण होता है जो कि व्यक्तित्त्व विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

व्यक्तित्त्व विकास का पाठ्य सहगामी क्रियाओं से संबंधः– पाठ्य सहगामी क्रियाओं का समायोजन, आत्मविश्वास, ईमानदारी, सामाजीकरण सहानुभूति, सामाजिकता और नागरिकता की भावना का विकास करने से प्रत्यक्ष संबंध होता है जो विद्यार्थी के संपूर्ण व्यक्तित्त्व को निर्धारित करती है। इस प्रकार पाठ्यक्रम जहाँ विद्यार्थियों के मानसिक विकास को प्रभावित कर विकसित करता है, वहीं दूसरी ओर पाठ्य सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों के शारीरिक एवं आध्यात्मिक पक्ष को मजबूत बनाती हैं। यह तीनों पक्ष मिलकर विद्यार्थी के व्यक्तित्त्व का विकास ईमानदारी, निःस्वार्थ भावना, दूसरों के प्रति सम्मान, उत्तम स्वास्थ्य, दयालुता, आत्मविश्वास, ज्ञान का व्यावहारिक प्रयोग, आत्मानुशासन, सामाजिकता, सहनशीलता एवं सामूहिक नेतृत्त्व आदि के द्वारा ही संभव है तथा यदि किसी व्यक्ति में इन गुणों का अभाव है तो उसका व्यक्तित्त्व विकास अपूर्ण माना जायेगा।

विद्यार्थियों में उपर्युक्त सभी गुणों का विकास पाठ्य सहगामी क्रियाओं के द्वारा संभव है, इन गुणों का विकास करने में पाठ्य सहगामी क्रियाएँ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अतः पाठ्य सहगामी क्रियाओं का व्यक्तित्त्व से न केवल सीधा संबंध है, बल्कि वह उसे महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है।

व्यक्तित्त्व विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाओं की प्रासंगिकताः–

भारत के पूर्व राष्ट्रपति एवं महान भारतीय शिक्षा विद् एवं दार्शनिक डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने शिक्षा का अभिप्राय बताते हुए यह स्पष्ट किया कि, मात्र सूचनाओं को प्रदान करना शिक्षा नहीं है अपितु यह संवेगो का प्रशिक्षण है।

इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि शिक्षा द्वारा व्यक्ति की भावनाओं और आदतों में सुधार होना चाहिए, जिससे वह ज्ञान एवं अज्ञान में, उचित या अनुचित में, सत्य और असत्य में व्यावहारिक सामंजस्य स्थापित कर सकें तथा एक नैतिक जीवन जी सकें।

वर्तमान में प्रदान की जाने वाली शिक्षा विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व को व्यावसायिक रूप से तो मजबूती प्रदान कर रही है परंतु वहीं विद्यार्थी अपने व्यावहारिक व सामाजिक जीवन में असंतुष्ट रहता है, क्योंकि कहीं न कहीं उसके व्यक्तित्त्व में उन गुणों का अभाव होता है जो व्यक्तित्त्व विकास के लिए आवश्यक है। यही कारण है कि उच्च शिक्षित विद्यार्थी जब व्यावसायिक जीवन में प्रवेश करते हैं तो उनमें से अधिकांश व्यावहारिक रूप से असफल होते हैं। व्यक्तित्त्व को प्रभावित करने वाले गुण और विशेषताओं को देखने पर ज्ञात होता है कि विद्यालय पाठ्यक्रम के साथ–साथ

पाठ्य सहगामी क्रियाओं को भी यदि सही एवं नियोजित ढंग से शामिल करें तो विद्यार्थी के व्यक्तित्त्व को पूर्णता के साथ विकसित किया जा सकता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं के द्वारा विद्यार्थी के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा भावनात्मक पक्षों का विकास होने में सहायता मिलती है।

आज के समय में शिक्षा के केवल सैद्धांतिक पक्ष की ही जरूरत नहीं है बल्कि इसके साथ–साथ प्राप्त ज्ञान को व्यावहारिक जीवन में कैसे उतारा जाए, इसको सीखने की भी आवश्यकता है। इन व्यावहारिक क्रियाओं को सीखने में पाठ्य सहगामी क्रियायें महत्त्वपूर्ण भूमिका हैं। पाठ्य सहगामी क्रियाओं के माध्यम से विद्यार्थी के अंदर उन सभी गुणों का विकास होता है जो व्यक्तित्त्व की संपूर्णता के लिए आवश्यक है।

निष्कर्षः– वर्तमान सदी में विद्यार्थी को न केवल ज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्टता की आवश्यकता है, बल्कि व्यावहारिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अधिक विकसित होने की आवश्यकता है। जिसकी पूर्ति विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास द्वारा ही संभव है। सर्वांगीण विकास हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 में भी सैद्धान्तिक शिक्षा के स्थान पर प्रयोगात्मक गतिविधियों पर अधिक बल देने की बात कही है, जिससे विद्यार्थियों को अनुभवजन्य शिक्षा प्राप्त हो सके, इतना ही नहीं नई शिक्षा नीति 2020 में भी यह कहा गया है कि पाठ्यक्रम से पाठ्य सहगामी क्रियाओं को अलग न माना जाए बल्कि विद्यालय के सभी विषयों में खेल, योग, नृत्य, संगीत, कला, चित्रकला, मूर्तिकला, मिट्टी के बर्तन बनाना, लकड़ी का काम, बागवानी और बिजली के काम आदि को शामिल किया जाए। इस नीति में शारीरिक शिक्षा, कला और व्यावसायिक शिल्प जैसे विषयों को गंभीरता से विद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल करने की बात कही है।

पाठ्य सहगामी क्रियायें पढ़ाई के साथ–साथ विद्यार्थी को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करती हैं, जिससे उनका व्यक्तित्त्व आकर्षक बनता है और विद्यार्थी अपने सफल भावी जीवन के लिए तैयार होता है, इतना ही नहीं किशोरावस्था के लिए तो पाठ्य सहगामी क्रियायें एक वरदान के समान है क्यों कि यह क्रियायें विद्यार्थी की मूल प्रवृत्तियों का शोधन कर उनके व्यक्तित्त्व को सही दिशा प्रदान करती हैं जिससे उनमें सही गलत को पहचानने की क्षमता उत्पन्न होती है और वह अपनी क्षमताओं का पूर्ण उपयोग करने में सक्षम होते हैं। इस प्रकार पाठ्य सहगामी क्रियाओं के द्वारा विद्यार्थियों का व्यक्तित्त्व न केवल पूर्ण रूप से विकसित होता है बल्कि इससे देश व समाज को भी आदर्श नागरिक प्राप्त होते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Speaking tree.in,Blog by Kumar Manish
2. पाण्डेय शकल, डॉ0 राम, मिश्रा शंकर, डॉ0 करूणा भारतीय शिक्षा की समसामायिक समस्याएँ, (पेज नं0 155–56) विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2005 संस्करण
3. भार्गव, डॉ0 महेश कौशिक, डॉ0 सीमा सिंह, सत्येन्द्र, भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं विकास (पेज नं0 219) राखी पब्लिकेशन, आगरा, 2015 संस्करण
4. भार्गव, डॉ0 महेश कौशिक, डॉ0 सीमा सिंह, सत्येन्द्र, भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं विकास (पेज नं0 244) राखी पब्लिकेशन, आगरा, 2015 संस्करण
5. International Journal of English and Education- www.ijee.org

6. Survey report of NFHS, USA
7. सक्सैना, सरोज, विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा (पेज नं0 205) साहित्य प्रकाशन आगरा, नवीन संस्करण
8. सिंह कुमार अरूण, शिक्षा मनोविज्ञान, (पेज नं0 256), भारती, भवन पटना, 2010 संस्करण

GYAN BHAV : JOURNAL OF TEACHER EDUCATION **ISSN 2319-8419**
VOL. - 10 FEBRUARY, 2021 **ISSUE- 13**

Effectiveness of Senior secondary school teachers and their stress

*** Arti Sharma**
**** Prof. J.S. Bhardwaj**
***** Dr. Rakesh Kumar Sharma**

Abstract: The quality of nation depends upon the quality of its citizens and the quality of its citizens depends indirectly upon the quality of teacher education. The quality of teacher education depends more than any other factor, upon the quality of their teachers, so the education of teachers should be given more importance. The art of teaching also includes presenting the subject matter in an attention–catching manner through simple language, pleasing gestures and soft voice. The effectiveness of a teacher is examined with the help of some criteria such as abilities teaching and performance of the student. On the other hand stress is a feeling of tension, which is both physical and emotional. Stress could be caused by physiological, psychological and environmental demands. Stress pervades our lives in all forms and affects our behaviour, performance and attitudes. There is no doubt that the stress affects very badly the behavior of a teacher in the class room. Present study was an attempt to determine the effect of teacher's performance in the class. It was found that the stress affects teacher effectiveness reciprocally. It was also found that the stress affects negatively the teacher performance equally male and female teachers teaching in senior secondary schools. As the sample of the present study was not sufficiently large, therefore the findings of the study could not be generalized for the entire population. From the view point of the generalization a large sample need to be investigated.

Key Words: Teacher Effectiveness, Stress, Senior Secondary School Teacher

Introduction:

"A student spends 25,000 hours in the campus. The school must have the best of teachers who have the ability to teach, love teaching and build moral qualities" **- A.P.J. Abdul Kalam**

Teaching is always a dynamic activity. It unfolds a world of knowledge, information, experience and education. In any event, no reform can succeed without the co-operation and active participation of teachers. The social, cultural and material status of educators should be considered as a matter of priority.

***** Research Scholar, Department of Education, C.C.S. University, Meerut, Mob No. 8393816115 Email- artisharmaccsu@gmail.com
** Head and Dean, Education, C. C. S. University, Meerut, Mob. No. 9412781934,
Email- bhardwajccsu@gmail.com
*** Associate Professor, Department of Education, C. C. S. University, Meerut.Mob.No. 9897434232
Email- rksharmaccsu@gmail.com

The status of the teacher reflects the socio-cultural ethos of a society; it is said that no people can rise above the level of its teachers. The government and the community shouldendeavor to create conditions that will help motivate and inspire teachers on constructive and creative lines. Teachers should have the freedom to innovate, and to devise appropriate methods of communication and activities relevant to the needs, capabilities and concerns of the community.

Teacher educators are, as such, the avenues of effective teaching and the strategies adopted for that purpose needs orientation and reorientation with changing needs and priorities in teacher education. The quality of nation depends upon the quality of its citizens and the quality of its citizens depends indirectly upon the quality of teacher education. The quality of teacher education depends more than any other factor, upon the quality of their teachers, so the education of teachers should be given more importance.

Mani (1988)[5] viewed that teacher has a role as an instructor, as a scholar, as a pedagogue, as a trainer, as an educator, as stimulator and as a guide for the students. It is an established fact that teacher's qualities, personality, character help the pupils to become good human beings thereby, contribute in building a knowledgeable and coherent society. In addition to the personality, personal qualities like; qualifications, interest, job satisfaction, good mental health are certain very important characteristics of the teacher, which affect his teaching and effectiveness.

Teacher Effectiveness: Teaching is a series of events through which teacher attempts to bring desired behavioural changes in students. It imparts useful information to the students and develops harmonious relationship between the teacher, the students and the subject. The art of teaching also includes presenting the subject matter in a attention–catching manner through simple language, pleasing gestures and soft voice. It is a step to bring about greater opportunity for the students to become educated. It is a complex situation with a wide range of activities wherein the teacher is the focal point. Teaching is the establishment of a situation conditioned to bring effective learning and good teachers are the ones that are capable human engineers. Most of them are effective moulders of learners' behaviour.

Teacher effectiveness refers to the effects of teaching by a teacher on the pupils teachers. It therefore refers to the progress the pupils make in achieving specifies to the progress the pupils make in achieving specifies educational objectives as a result of teachers teaching. From this definition it follows that teacher effectiveness should be measured not from what the teacher does but what changed are produced in the behavior of pupils learns does not solely depend upon how the teacher has taught. It also depends on pupil's previous knowledge and past experience, pupil's abilities and interests in classroom condition etc. So the teacher effectiveness measured by change in pupil learning will not be stable characteristics of the teacher but will vary depending on teaching conditions and pupil characteristics.

The term effectiveness is relative and refers to some criteria. The effectiveness of a teacher is examined with the help of some criteria such as abilities teaching and performance of the student. Teachers have a powerful long lasting influence on their student. They directly affect the students learn what they learn, how much they learn, and the ways they, interact with one, another and the world around them. Considering the degree of the teachers influence we must understand what teachers should do to promote positive results in the lives of student with regard to school achievement, positive attitude toward school, interest in learning and other desirable outcomes.

Teacher effectiveness is related to teacher performance which refers to what the teacher does while teaching a class. The teacher tries to about changes in pupils learning thought teacher performance. Teacher performance refers to teachers' classroom behavior while teacher effectiveness refers to the change in learning of pupils taught by the teacher. Since teacher effects are caused mainly through teacher performance.

Chayya (2001)[2] states that effective teachers take personal responsibility to students learning, determines the difficulty of the lesson with the ability of the student and give the opportunities to students to practice newly learned concepts. For the present study, teacher effectiveness has been defined as an effective teacher who has clear concepts of the subject matter, ability to write clear objectives for his/her course, ability to organise learning materials, ability to communicate his/her knowledge with the students successfully and to deal with classroom situations.

Several assumptions are implicit in this definition of teacher effectiveness. An initial assumption is that an effective teacher tends to be aware of and actively pursue goals. These goals guide their planning as well as their behaviour and interactions in the classroom. The second assumption is that the vast majority of teachers' goals is or should be concerned either directly or indirectly with the learning of their students.

The degree to which a given teacher, elementary school teacher and secondary school teacher is effective depends to a certain extent on the goals being pursued by that teacher. Student learning is better, faster, and/or more long-lasting when teachers are able to play the 'Four Aces'. **The Four Aces of Effective Teaching are Outcomes, Clarity, Engagement and Enthusiasm.**

1. **The first Ace** of Effective Teaching concerns the utilization of **an outcome-based** instructional orientation. Outcomes enable students to focus their attention on clear learning goals. These outcomes inform students of where they are going and how they will get there. Outcomes also provide the teacher with a framework for designing and delivering the course content. Furthermore, outcomes enable teachers to assess student learning as a measure of their own instructional effectiveness. More effective teachers use designated outcomes as a basis for the establishment of curricular alignment. Curricular alignment is the degree to which the employed instructional methods and assessment techniques enable the student to acquire and/or demonstrate the desired learning.
2. **The second Ace** of Effective Teaching involves the **clarity of instruction**. More effective teachers typically provide students with highly explicit directions and explanations concerning the course organization and content. When delivering instruction, nothing should be left to chance. If students are not meeting your expectations, your methods of delivery may lack the required degree of clarity. When a teacher tells, shows, and makes the message available from alternate perspectives to alternate senses, Then he/she is engaged in effective instructional practice. Additionally, the course should be structured in a way that affords students the opportunity to make connections between the new material that is being presented and the concepts that they have already learned. This instructional strategy is referred to as curricular scaffolding. When a teacher helps students connect new information with what they already know, the teacher is assisting these students in an accurate organization of information.

3. **The third Ace** of Effective Teaching is **Engagement**. This principle suggests that students learn by doing. The formal lecture represents an archaic model defined by instructor as deliverer and student as receiver. This model exemplifies one-way communication and perpetuates an incomplete model of education. Accordingly, teachers must create a dynamic, educational environment that affords students an opportunity to practise every concept that they are learning. More effective teachers utilize instructional strategies that engage students repeatedly throughout the entire lesson. This engagement should begin early in the lesson and continue throughout the lesson introduction, body, and closure. As a general rule, a teacher should limit a lecture to no more than thirty minutes before employing a learning activity that actively engages all students. Furthermore, these engagement activities are intended to facilitate the development of the knowledge, skills, and attitudes that will enable the student to accomplish the previously identified lesson outcomes. This type of curricular alignment is a critical component of an effective, student-centered learning environment.
4. **The fourth Ace** of Effective Teaching is **Enthusiasm**. As straightforward as it may seem, "if you hate to teach it, your students will hate to learn it." Conversely, if you love to teach it, your students may very well love to learn it. Enthusiasm is contagious. More effective teachers display a high level of enthusiasm that reflects their professional competence and confidence. These characteristics are derived from the individual teacher's subject matter knowledge and instructional experience. Teachers can begin to establish a positive learning environment by showing their passion for the subject matter, using student names, reinforcing student participation during class, and being active in moving among the students. The most critical component for fostering classroom enthusiasm, however, is student success. Accordingly, it is the teacher's responsibility to establish a classroom environment that allows for a high degree of student achievement. Ultimately, high levels of student achievement serve as a powerful motivator for both student and teacher.

TEACHER STRESS: Stress is defined as "a state of psychological and physiological imbalance resulting from the disparity between situational demand and the individual's ability and motivation to meet those needs."

Selye (1974)[7], one of the leading authorities on the concept of stress, described stress as "the rate of all wear and tear caused by life."

Stress can be positive or negative. Stress is good when the situation offers an opportunity to a person to gain something. It acts as a motivator for peak performance. Stress is negative when a person faces social, physical, organizational and emotional problems.

Causes of Stress: The major causes of stress at work or in organization:

1. Career Concern.
2. Role Ambiguity
3. Rotating Work Shifts
4. Role Conflict.
5. Occupational Demands.
6. Lack of Participation in Decision-making.
7. Work Overload
8. Work Under load
9. Poor Working Conditions
10. Lack of Group Cohesiveness
11. Interpersonal and Inter Group Conflict
12. Organizational Changes
13. Lack of Social Support

Stress is a feeling of tension, which is both physical and emotional. Stress could be caused by physiological, psychological and environmental demands. Stress pervades our lives in all forms and affects our behaviour, performance and attitudes.

Selye first introduced the concept of stress into the life science in 1936. He defined stress as "The force, pressure, or strain exerted upon a material object or person which resist these forces and attempt to maintain its original state." In educational sector, stress is increasing day by day because teaching today's young people is not only arduous work, but can be dangerously stressful. Anxiety due to school reform

efforts, minimal administrative support, poor working circumstances, lack of involvement in school decision making, and lack of resources have been identified as factors that can cause stress among educators.

Stress has been defined as an 'unpleasant emotional state fraught with tension, frustration, anxiety and emotional exhaustion' (Kyriacou, 1989)[4]. Stress is also defined in terms of excessive pressure or demands but also recognize the idea of estruses in which a certain amount of stress is beneficial and necessary. They regard stress as the 'intervening variable occurring as a reaction to an accumulation of stressors which incorporates emotional, behavioural and physiological components. Stressors include all aversive circumstances that threaten the well being of a person but are prone to individual differences in appraisal.

In the competitive world a teacher's job is quite stressful. There are many reasons behind it, like work overload, deadline for course completion, too many tests, exams, job insecurity, professional behaviour of student, administrative pressure, physical conditions, low salary, transfer, promotions etc.

Antoniou and Polychroni (2006)[1] reported that female teachers experienced significantly higher level of occupational stress, specifically with regard to interaction with students and colleagues, workload, student's progress and emotional exhaustion. Increased occupational stress among teachers had weakened the efficiency of the teachers (Sabu and Jangiah; 2005)[6].

Study of teacher effectiveness in relation to stress: In other words, it is a set of skills that enables the person to survive in a complex world. The personal, social and survival aspects of overall intelligence the elusive common sense and sensitivity that are essential to effective daily functioning are being studied by psychologists. They are also studying the phenomenon on different categories of people. In the teaching learning process a teacher must understand his personality, behavior and interest. Communication skills, attitude and emotions affect the children's behavioural pattern.

Teacher's Psychological support in schools should therefore not only be aimed at learners, but the wellbeing of the teachers should also be attended to. The existence of high levels of occupational stress in the teaching profession, and the associated economic and health consequences, suggest there is a need to

develop suitable interventions to promote the well-being of teachers as well as to reduce the occurrence and consequences of stress.

An innovative evidence-based approach is required to address the problem of occupational stress in teachers, given the unique stressors these individuals face on a daily basis. This study implemented and evaluated an EI training program for primary school teachers designed to reduce occupational stress and increase psychological- and physical well-being.

The training program, based on cognitive-behavioral and psycho-educational strategies, aimed to teach teachers how to better deal with emotions and reduce their levels of occupational stress. Research suggests that stress and emotion are related constructs that do not occur independently from one another. The experience of stress is the manifestation of negative emotions triggered by danger, threats or challenges.

The important role that emotions play in the occupational stress process is only just being recognized. As emotions are difficult to measure in the workplace, they have generally been ignored in organizational research. However, the emergence of EI has lead to a new focus on the role of emotions in the workplace.

Operational definitions of the important terms: Operational definition is the definition of any particular term used in certain redefined situations. This helps to understand the terms used in sating the problem. Two terms have been used in the present study namely, Teacher Effectiveness and Stress. In the present study following terms were required to define operationally.

Teacher Effectiveness: Teacher effectiveness means being effective as a teacher not only being proficient with teaching processes that lead to student achievements but also being a person who can facilitate positive change in people's lives. Teacher effectiveness includes characteristics of a teacher, his personality, attitudes etc., and process like teacher-pupil interaction and production variables like outcomes of teacher-learning process, namely pupil achievement.

"Teaching is an activity, a unique professional, rational and human activity in which one creatively and imaginatively uses himself and his knowledge to promote the learning and welfare of others". (Dhillon and Kaur, 2009)[3]

In the present study by the term Teacher Effectiveness we mean the scorte obtained by a teacher in the rating on Teacher Effectiveness Scale by P. K. Kumar and D. N. Mutha

Teacher stress: Stress is a feeling of tension, which is both physical and emotional. Stress could be caused by physiological, psychological and environmental demands. Teacher stress may be defined as a condition where in job related factors interact with the individual to change his/her psychological or physiological conditions in such way that a person is forced to deviate from normal functioning. (Selye, 1974) Operationally Teacher stress is the rating on Teacher Stress Inventory by P.K.Sudheesh Kumar & Anil Kumar

Objectives of the study: The objectives of the present study have been formulated as:

1. To study and compare the teacher effectiveness of the male & female senior secondary school teachers.
2. To study and compare the teacher stress of the male & female senior secondary school teachers.
3. To study the effect of teacher stress on teacher effectiveness of senior secondary school teachers.
4. To study the relationship between teacher effectiveness and teacher stress among senior secondary school teachers.

Hypotheses of the study: Following hypothesis have been designed:

1. There is no significant difference in teacher effectiveness between male & female senior secondary school teachers.
2. There is no significant difference in teacher stress between male & female senior secondary school teachers.
3. There is no significant impact of teacher stress on teacher effectiveness of senior secondary school teachers.

4. There is no significant relationship between teacher effectiveness and teacher stress among senior secondary school teachers.

Population of the study: The population of the study includes all the senior secondary school teachers, teaching in various senior secondary schools recognized by U.P. Board located in Meerut City only.

Sample: At the first stage out of total population of secondary college/school of U.P Board in Meerut City a sample of 10 schools randomly. Keeping in view, proper representation of both The genders (male and female), out of the total population of teachers teaching in secondary classes of these schools, a sample of 120 teacher were selected randomly . The schools were selected through simple random sampling technique. After selecting the schools, the next important step was to establish rapport with the principals of each of these above schools, they were first contacted through a personal letter addressed to them by the investigator and subsequently the investigator personally went to each of the above school and to have a contact with their principals. They were explained the significance and the purpose of the study and their proper action for a successful conduct of the study. Each one of the principals was highly cooperative and extended his cooperation willingly.

Analysis and Interpretation of the Data: After collecting the data statistical techniques have been used to calculate mean and standard deviation of different groups and then 't' value and coefficient of correlation were calculated and the testing of significance level were made accordingly. Following Tables show the results:

Table 1. Teacher Effectiveness scores of male & female senior secondary school teachers.

Gender	N	Mean	S.D.	't' value	df	Level of significance
Male	60	307.266	15.34	1.27	118	Not significant at 0.05 level
Female	60	311.883	23.41			

**Not significant at 0.05 level

Table 1 shows that obtained 't' value is 1.27 and table value of 't' for df 118 at 0.05 level is 1.98 and at 0.01 is level is 2.62 . The calculated 't' value is less the standard 't' value at 0.05 level of

significance. It means that groups of senior secondary school teachers belonging to male & female categories do not differ significantly in terms of their teacher effectiveness.

Table 2. Teacher Stress scores of male & female senior secondary school teachers

Gender	N	Mean	S.D	't' value	df	Level of significance
Male	60	144.78	14.58	2.15	118	Significant at 0.05 level
Female	60	152.65	24.24			

**Significant at 0.05 level

Table 2 shows that obtained 't' value is 2.15 and table value of 't' for df 118 at 0.05 level is 1.98 and at 0.01 level is 2.62. The calculated 't' value is greater the standard 't' value at 0.05 level of significance. It means that groups of senior secondary teachers belonging to male & female categories differ significantly in terms of their stress.

Table 3. High and Low level of Teacher Stress scores on Teacher Effectiveness.

Teacher Stress	N	Mean	S.D	't' value	df	Level of significance
High	15	301.8	19.06	0.152	27	Not significant at 0.05 level
Low	14	302.92	19.13			

**Not significant at 0.05 level

Table no.4.5 shows that obtained 't' value is 0.152 and table value of 't' for df 27 at 0.05 level is 2.05 and at 0.01 level is 2.77. The calculated 't' value is less than the standard 't' value at 0.05 level of significance. It means that groups of senior secondary teachers belonging to high level of teacher stress & low level of teacher stress do not significantly in terms of their teacher effectiveness.

Table 4. Coefficient of correlation between Teacher Effectiveness and Teacher Stress

S. No.	Variable	Coefficient of correlation	Level of significance
1.	Teacher Effectiveness	-0.14	Not significant at 0.05 level
2.	Teacher Stress		

Table 4 reveals that the value of correlation coefficients between Teacher Effectiveness and Teacher Stress is -0.14 and table value of 'r' for df 118 at 0.05 level is 0.182 The calculated 'r' value is less than the standard table 'r' value at 0.05 level of significance. It indicates that there is a negative correlation between teacher effectiveness & teacher stress of senior secondary school teachers. It means that teacher effectiveness and teacher stress of senior secondary school teachers move in the opposite direction.

Conclusion: On the basis of above analysis and interpretation of the data it can be concluded that-

- Senior secondary teachers belonging to male & female categories differ significantly in terms of their stress.
- Senior secondary teachers belonging to high level of teacher stress & low level of teacher stress do not significantly in terms of their teacher effectiveness.
- Senior secondary school teachers' effectiveness and teacher stress of both move in the opposite direction.

Therefore we can say that teacher effectiveness and teacher stress are very interesting and attracting issues for the research.

Educational implication of the study: Teaching profession is a stressful job. As the present study has revealed that low emotional intelligence affects teacher effectiveness and teacher stress. To overcome there situations in workplace there is a need to develop the emotional intelligence. of teachers to reduce the severity of occupational stress in them. Proper training on emotional intelligence should be given to manage stress situations. This can be done by integrating the emotional intelligence components in the curriculum of senior secondary teachers Education programme both pre-service and in-service levels. The principal of the institution should provide opportunities for professional enhancement in the form of participation in professional meetings and seminars, promoting situation for healthy professional interactions and making the working environment more flexible to work. Thus the findings are useful for administration, meaning there by that the principals should organize-such programmes which develop and increases Emotional Intelligence of teachers so that they may give better performance in future**.**

References:

1. Antoniou, A.S. & Polychroni, F. [2006]. Gender and age difference in occupational stress and professional burnout between primary and high school teachers in Greece. British Journal of Education Psychology, 21.

2. Chayya, M.P. (2001). Effective teacher-- Effective Strategies of Teaching. New Delhi: Alpha publications.

3. Dhillon, J.S &NavadeepKaur, N. (2009). Teacher effectiveness in relation to their value patterns.Edutracks, Vol. 9 (3), pp. 26-29.

4. Kyriacou, C & Pratt (1989). Teacher Stress and Burnouts. An International Review of Educational Research, 29 [2], 146-152. 18. Mathews,G., Zeidner, M. & Robberts, R. [2002]. Emotional Intelligence, Science and Myth. London: MIT Press.

5. Mani, Y.P. (1988) research in emerging field of education: concepts, trends and prospects. New delhi: sterling publisher pvt.ltd.

6. Sabu, S and Jangaiah, C (2005) :Ajdustment and Teachers' Stress Edutracks, Vol 5 No 1 pp 32-35 view of Educaitonal Research, Vol 29 (2) pp 146-152

7. Selye, H (1974): Stress without Distress, Newyork; NAL Penguin Inc

JOURNAL

Varshney Printers & Suppliers
9758286283, 9536197078